(1)

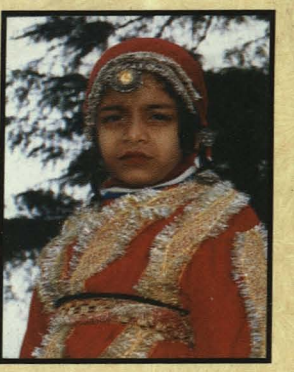

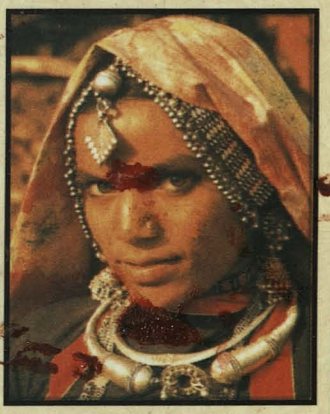

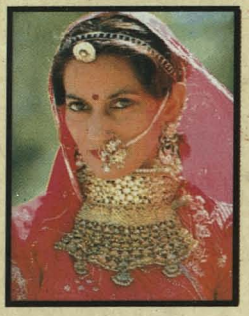

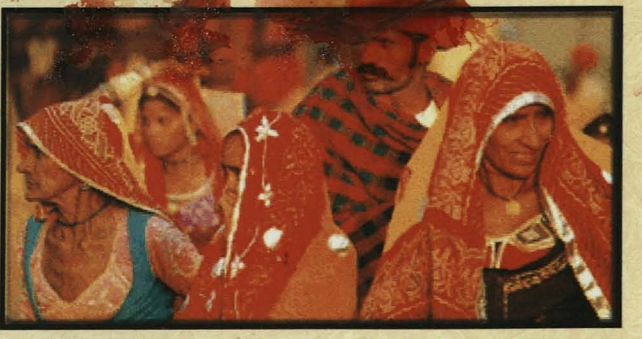

सत्यमेव जयते

सांस्कृतिक प्रस्तुति

Cultural Pageant

2002

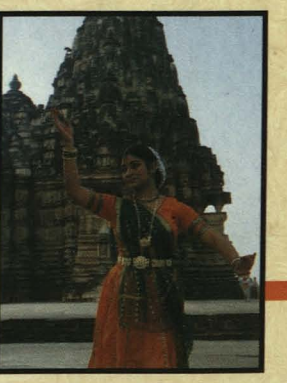

2

प्रस्तावना

आज, भारत नई सहस्त्राब्दी का तीसरा गणतंत्र दिवस मना रहा है। आज भारतीय गणतंत्र की 52 वीं वर्षगांठ भी है। सांस्कृतिक प्रस्तुति से उन मूल्यों की एक झलक मिलती है जिनके लिए भारतीय सभ्यता जानी जाती है। इस प्रस्तुति में इस देश की जनता के सपनों और आकांक्षाओं की झलक भी दिखाई देती है।

रंगारंग झांकियों में भारत की सामाजिक, सांस्कृतिक धरोहर की विभिन्न रूपों में झलकी प्रस्तुत की गई है। इनमें भारत की आर्थिक और प्रौद्योगिकीय प्रगति भी दर्शाई गई है। इन झांकियों में एकता की हमारी राष्ट्रीय भावना के साथ ही दृढ़–निश्चय और देशभक्ति का भी चित्रण है। सांस्कृतिक प्रस्तुति हमारे गौरवपूर्ण अतीत और प्रगतिशील वर्तमान दोनों का प्रतीकात्मक प्रस्तुतिकरण है, जिसका सार निम्नवत् है :–

'असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्माऽमृतं गमय।

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभागभवेत।।

स्कूली बच्चों द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रमों में देश के लिए प्रेम और समर्पण का चित्रण है। हमारे देश के युवाओं में इस नई सहस्त्राब्दी में भारत को महान देश बनाने की अपनी आकांक्षाओं को प्राप्त करने के प्रति दृढ़–निश्चय मौजूद है।

Introduction

Today, India is celebrating its 3rd Republic Day of the new millennium. It is also the 52nd anniversary of the Indian Republic Day. The cultural pageant presents a glimpse of the values for which Indian civilization has stood for. The pageant also reflects the dreams and aspirations of its people.

The colourful tableaux depict a view of the social, cultural heritage of India and all its varieties. They also exhibit the economic and technological facets of India. The underlying theme of togetherness and the spirit of our nation, suffused with determination and patriotism are painted. The cultural pageant symbolizes our pride in both of our glorious past and celebrates our dynamic present. This is summed up thus:-

'असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्माऽमृतं गमय।

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभागभवेत।।

'May God take us from untruth to truth, from darkness to light and from death to immortality'.

'May all be happy, healthy and good human being and nobody be sad and unhappy'.

The cultural programmes presented by the school children symbolize the love and dedication for the nation. The youth of our country have a strong determination to achieve their aspirations of making India a great nation in this new millennium.

छन्द

असम विभिन्न जातियों, संस्कृतियों और लोक परंपराओं का शानदार खजाना है। संगीत और नृत्य विभिन्न जातीय–समूहों की लोक संस्कृति की जान रही है और इसका साथ देते रहे हैं परंपरागत संगीत उपकरण।

'असम की छन्द' नामक झांकी में इस राज्य के देशी संगीत उपकरण प्रस्तुत है जो कि अजनबी की आत्मा को भी झंकृत कर देने में सक्षम है और पुराने और नए समय को एक सूत्र में पिरो देते हैं। सपने संगीत से उपजते हैं और संगीत सपनों से पैदा होता है।

झांकी के ट्रैक्टर भाग में एक लोक कलाकार को एक लोकप्रिय संगीत उपकरण 'चारिन्दा' को बजाते देखा जा सकता है।

असम

Rhythms

Assam with its diverse ethnic and cultural streams is the repository of an amazing wealth of folk traditions. Music and dance have been an essential part of folk culture of different ethnic groups. These are performed to the accompaniment of traditional musical instruments.

The tableau under the caption: "Rhythms of Assam" presents the indigenous musical instruments of the State which create bewitching music to stir even a stranger's soul and provide thread of continuity between the distant past and the present. Dreams are made of music and music nurtures dreams.

The tractor portion of the tableau is figured with a folk artiste playing 'Charinda' a popular folk instrument.

Assam

जन–जीवन

572 पन्ना द्वीपों, छोटे–छोटे द्वीपों और चट्टानों वाले अंडमान और निकोबार द्वीप समूहों का संघीय क्षेत्र मुख्य भारतीय भू–भाग के पूर्व में बसा हुआ है।

अंडमान और निकोबार की झांकी में इस संघ क्षेत्र के निवासियों के जीवन की झांकी मिलती है। झांकी में मचान पर बनी लकड़ी की झोपड़ियां और छप्पर, नारियल, जहरीले सांप, बिच्छू और अन्य जंगली जानवर, जोकि आदिवासी लोगों के जीवन का अभिन्न अंग हैं, भी देखे जा सकते हैं। जिंदगी की पेचीदगियों को मानो इन सब ताने–बाने से बुनकर दर्शाया गया है।

झांकी के ट्रैक्टर भाग में समुद्री पक्षियों को दर्शाया गया है जोकि अपने शिकार को पकंड़ने की ताक में हैं। अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में लगभग 218 प्रजाति के पक्षी मिलते हैं।

अंडमान और निकोबार द्वीप समूह

Life Style

Union Territory of Andaman and Nicobar Islands, an archipelago of 572 emeralds islands, islets and rocks is situated on the east of the Indian mainland.

The tableau of Andaman and Nicobar presents a glimpse of the life of people of the U.T. Raised wooden huts and shelters, coconuts, poisonous snakes, scorpions and other wild animals - part and parcel of the tribal people are also seen on the tableau. Life's little intricacies are woven out from these assortments of things.

The tractor portion of the tableau showcases the sea birds, which are eagerly waiting for trapping its prey. Andaman and Nicobar Islands harbour some 218 species of birds.

Andaman and Nicobar Islands

भागलपुरी रेशम

रेशम–कपड़ों का शहंशाह। रेशम सदियों से हर अमीर–गरीब और ताकतवर इंसान के आकर्षण का केन्द्र रहा है। भारत विश्व के प्रमुख रेशम उत्पादक देशों में से है। वास्तव में हथकरघों पर सपने बुनते हुए भारतीय बुनकर पूरे विश्व के डिजायनरों के आकर्षण का केन्द्र बन गए हैं। बिहार के भागलपुरी रेशम का रेशमी कपड़े की दुनियां में गौरवपूर्ण स्थान है। भागलपुर का सिल्क मोहक, ठाठदार तथा रोमानी अंदाज लिए हुए है। एक तुच्छ से कीट के रेशे से निकला यह आकर्षक कपड़ा भारतीय वस्त्रों का सिरमौर रहा है। अपनी बारीकी के लिए मशहूर भागलपुरी रेशम अपनी चमक–दमक के लिए विख्यात है। भागलपुर के रेशमोद्योग ने राज्य में काफी रोज़गार मुहैया करवाया है और यह राज्य की अर्थव्यवस्था को स्थिरता प्रदान करता है।

ट्रैक्टर भाग में रेशमी कीट दिखाया गया है।

बिहार

Bhagalpur Silk

Silk – the queen of textiles since time immemorial has fascinated all, the rich, the poor and the powerful. India is one of the major silk producing countries of the World. In fact, weaving dreams on the looms, the Indian weavers have captured centre-stage of designer's world. Bihar's Bhagalpur silk has a place of distinction and pride in the realm of silk. Bhagalpur silk whispers of the exotic, the luxurious and the romantic. This sensuous cloth, conjured from the strand of a lowly worm, has reigned supreme as the leader of Indian textiles. Synonymous with sleek splendour, Bhagalpur silk is sibilant with lustre. The Silk industry of Bhagalpur has generated remarkable employment and sustained the state economy.

The tractor shows the silk moth.

Bihar

ढोकरा शिल्प

यह शिल्प पूर्व के मध्यप्रदेश और नए छत्तीसगढ़ की विभिन्न जनजातियों के द्वारा देशी तरीके से धातु में ढाला गया है। छत्तीसगढ़ द्वारा राज्य की जनजातियों के पुराने और लुप्तप्रायः ढोकरा शिल्प को प्रस्तुत किया जा रहा है। इस शिल्प के विशिष्ट डिजायन तथा आकार में नए राज्य छत्तीसगढ़ की भावनाओं और विचारों का चित्रण मिलता है। झांकी में इस शिल्प के नानारूप दर्शाए गए हैं। शिल्प क्या है मानो सपनों को धातु में ढालकर पेश किया गया है।

इस झांकी के द्वारा नए राज्य छत्तीसगढ़ ने अपनी अनन्य पहचान स्थापित की है।

छत्तीसगढ़

Dhokra Craft

Crafted out of metal through indigenous methods by the various tribes of once State of Madhya Pradesh now carved out into a distinct State of its own; Chhatisgarh. Chhatisgarh presents an old but dying Dhokra Craft of tribes of the State. Its distinctive design and shape reflects the inherent expressions of feelings and thoughts admire of the new State of Chhatishgarh. Various types and crafts are displayed on the tableau. The crafts are dreams converted into metal form.

The new State of Chhatisgarh has through this tableau manifested its unique identity.

Chhatisgarh

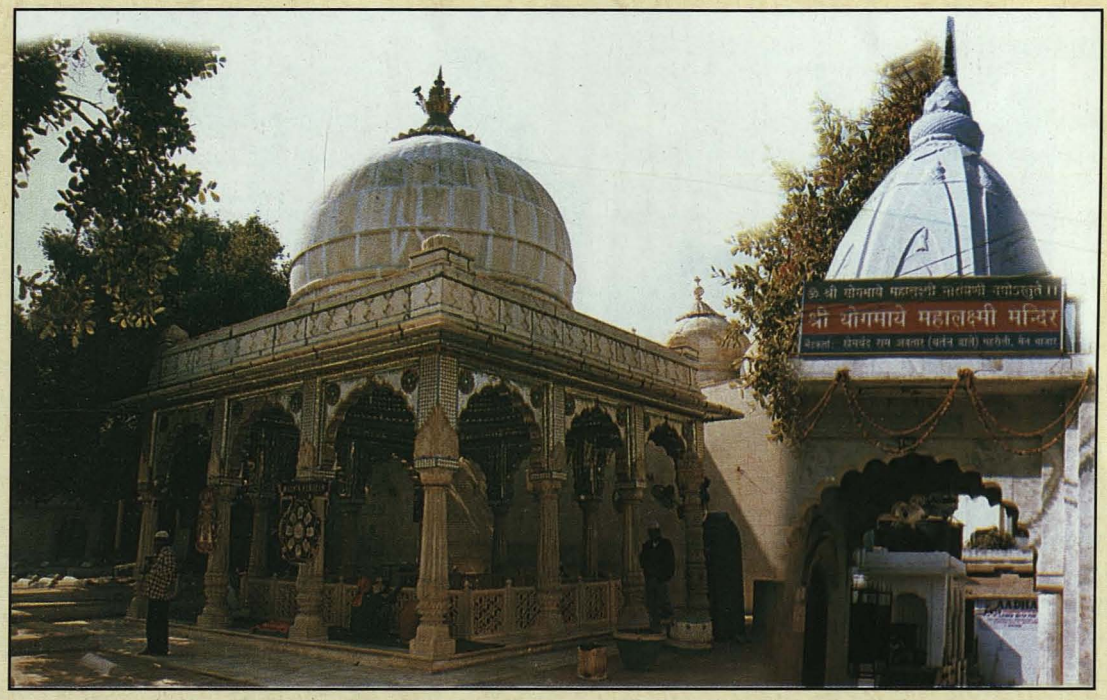

सांप्रदायिक सद्भाव

दिल्ली ! भारत की राजधानी, विविध धर्मों, क्षेत्रों, जातियों के लोगों की भूमि, सांप्रदायिक सद्भाव और सहिष्णुता का जीता जागता उदाहरण है। महरौली में अक्टूबर के महीने में मनाई जाने वाली 'फूल वालों की सैर' दिल्ली के सांप्रदायिक सद्भाव का प्रतीक है। सर्दियों के आगमन पर प्रतिवर्ष महरौली में मानो एकता और मेल–जोल का उत्सव उतर आता है।

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली की इस झांकी में शहनाई वादकों और वाद्य कलाकारों द्वारा दोनों ओर से घिरे लगभग 50 लोगों की शोभायात्रा दर्शाई गई है। इस में फूलों के सुन्दर सजे हुए 'पंखे' और फूल–मालाएं लेकर लोग सूफी संत ख्वाजा कुतबुद्दीन बख्यार काकी की दरगाह और उनकी दरगाह के करीब ही स्थित योगमाया मन्दिर में चढ़ाने के लिए जाते हैं। श्रद्धालुओं को मन्दिर में चादर चढ़ाते और दरगाह पर फूलों की चादर चढ़ाते देखा जा सकता है। इस मन्दिर और दरगाह की पृष्ठभूमि में कुतुबमीनार की अनुकृति दिखाई गई है।

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली

Communal Harmony

Delhi ! India's capital, inherited by people from all regions, religions and castes is a living example of communal harmony and tolerance. "PHOOL WALON KI SAIR" is a symbol of this communal harmony, which is celebrated in Delhi every year in the month of October at Mehrauli. In the whiff of autumn's breeze comes the dawn of unity and togetherness every year at Mehrauli.

The tableau of NCT Delhi depicts the historic festival with a procession of around 50 people on both sides of the tableau guided by Shenai and drum players. The procession is accompanied by beautifully decorated floral fans called 'Pankhas', fresh flowers and garlands to the Dargah of 13th century Sufi Saint Khwaja Qutbuddin Bakhtyar Kaki and the Yogmaya temple located next to the dargah. Devotees are also seen offering Chadar to the Temple and floral Chadar to the Dargah. In the background of the temple and the dargah, replica of Qutub Minar is shown.

N.C.T. Delhi

सद्भाव

अति प्राचीन काल से गोवा पर विभिन्न राजघरानों और राजाओं ने राज किया है। गोवा की समृद्ध तथा रंगबिरंगी संस्कृति में इन्हीं ऐतिहासिक प्रभावों का ताना–बाना दिखाई देता है जोकि एकता का प्रतीक बन गया है। इस बात का श्रेय गोवावासियों को ही जाता है कि लम्बे समय तक विदेशी शासकों के अधीन रहने के बावजूद उन्होंने अपनी समृद्ध संस्कृति को संजोए रखा है। गोवा में इतिहास खत्म नहीं हुआ, वह केवल नजरों से ओझल था जिसे वहाँ के लोगों ने अपनी कृतज्ञता, हिम्मत और साहस से बनाए रखा है।

गोवा की झांकी में 'दीपस्तंभ' 'सलीब' तथा 'घोडे मोडनी' तथा इसके बाद रथ के संगम से धार्मिक सद्भावना को प्रदर्शित किया गया है। राजाओं की पश्चिमी वेशभूषा तथा कलाकारों द्वारा क्षेत्रीय नृत्य राज्य के विभिन्न धर्मों और संस्कृतियों के अनूठे संगम का चित्रण करते दिखाई देते हैं। राज्य का संगीत और नृत्य का यह उत्सव "शिग्मो मेल" अनेकता में एकता को दर्शाता है।

गोवा

Harmony

Since time immemorial, different dynasties and rulers ruled Goa. Goa's rich and diversified culture woven into the thread of unity owes its origin to the various historical influences. The credit is wholly due to the Goan people for preserving their rich culture in spite of having been under foreign occupations for a long time. History did not die in Goa; it was only in slumber; preserved by the gratitude, strength and courage of its people.

The tableau of Goa showcases religious harmony by focussing on the **'Deepastambha'**, the **'Cross'** and **'Ghode Modni'** followed by a Chariot (Rath). Western dresses of kings and the regional dances performed depict the unique blend of different religions and cultures of the State. The festival of music and dance "Shigmo Mel" signifies unity in diversity.

Goa

भूकंप और पुनर्वास

गुजरात की झांकी में 26 जनवरी 2001 को राज्य में विध्वंश का तांडव मचाकर बहुत–सी जानों और संपति को लीलने वाले भूकंप का चित्रण किया गया है। हालांकि प्रकृति के इस तांडव ने लोगों का जीवन दुष्कर कर दिया और कुछ समय के लिए सामान्य जन–जीवन अस्त–व्यस्त हो गया परंतु यह ध्वंस से जीवन की पुनः शुरुआत करने के मानवीय मनोबल को नहीं तोड़ पाया। आज गुजरात भूकंप से पहले की तरह ही सामान्य और उत्साह से परिपूर्ण नजर आता है।

अग्रभाग में ''शुष्क वृक्ष'' और पश्च भाग में 'हरित वृक्ष' प्रकृति में ध्वंस और निर्माण की शक्तियों के प्रतीक हैं और इस बात का भी प्रतीक हैं कि आदमी का मनोबल क्षणिक रूप से भले ही डगमगा जाए परंतु उसे पूरी तरह परास्त नहीं किया जा सकता।

Earthquake and Rehabilitation

The tableau of Gujarat presents the devastating earthquake that rocked the State on 26th January 2001 causing enormous loss of lives and property and its aftermath.

Although the fury of nature was its worst, causing misery to the people and paralysing the normal life temporarily; it has not suppressed the resilient power of the human spirit of rising from ruin and starting life afresh. Today, Gujarat is as normal and upbeat as it was before the earthquake.

The 'dry tree' on the tractor and 'live tree' at the end of the tableau symbolically represents the 'destruction' and 'regeneration' forces at play. The human spirit cannot die; it can only be momentarily shaken.

Gujarat

गुजरात

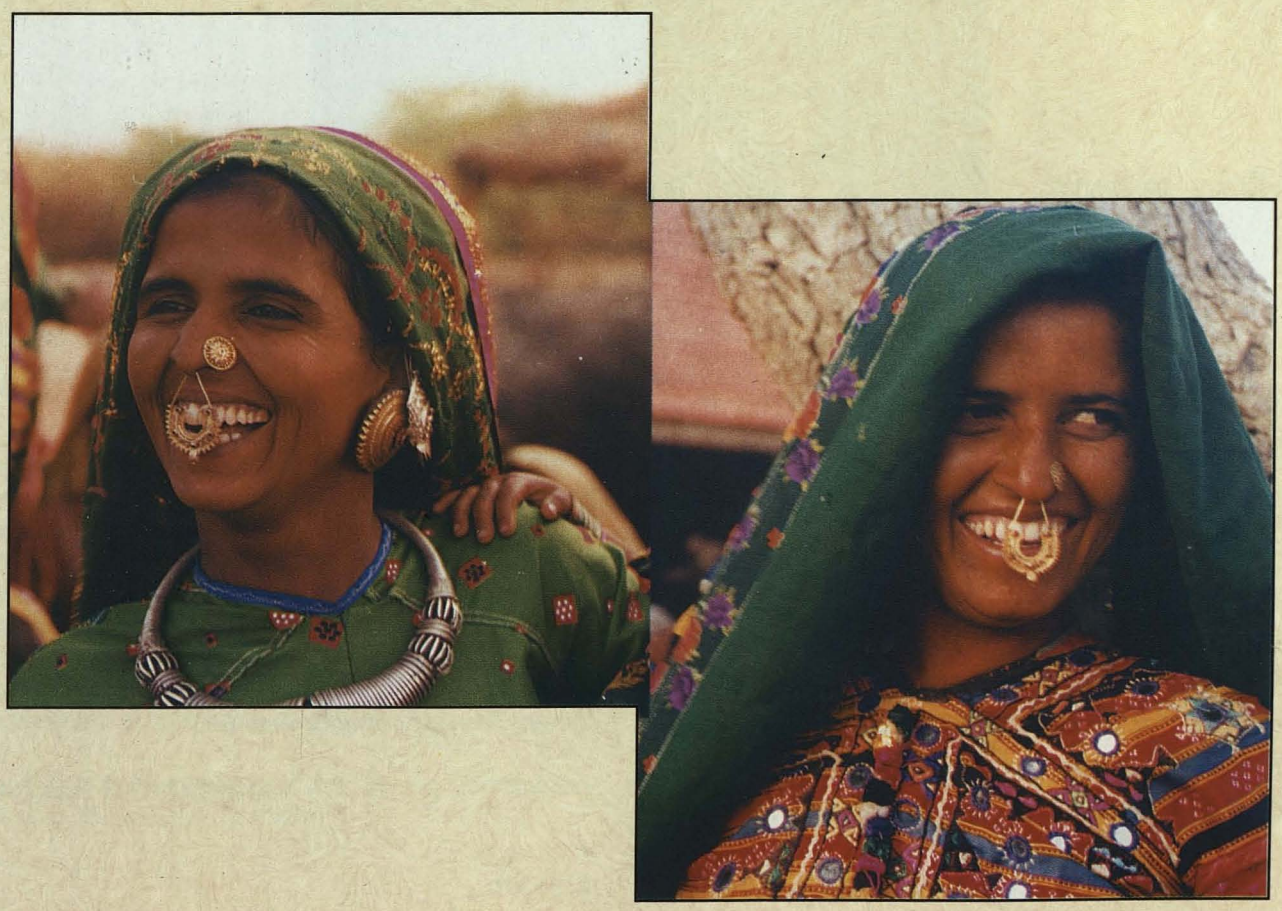

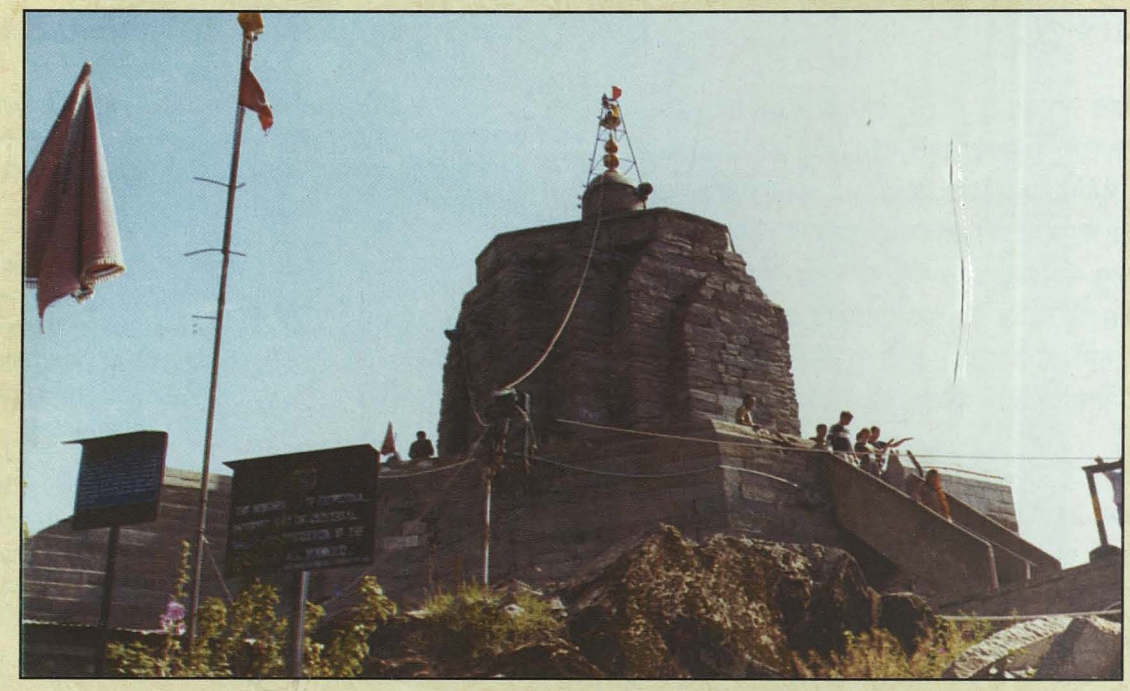

समन्वित संस्कृति

कश्मीर अर्थात् धरती पर स्वर्ग, को प्राकृतिक दृश्यों, हरी–भरी घाटियों, कलकल करते झरनों, शांत झीलों, तथा बर्फ से ढकी चोटियों के लिए जाना जाता है। यहाँ पर बहुत से सूफी संत और ऋषि भी हुए हैं जिनके कारण कश्मीर की समन्वित संस्कृति विकसित हुई है।

जम्मू–कश्मीर की झांकी में मुगल बादशाह द्वारा बनवाए गए 'हरिपर्वत' नामक किले की करीबी पहाड़ी की तलहटी में स्थित ऐतिहासिक गुरुद्वारे, मस्जिद और मन्दिर के द्वारा, जहाँ पर प्रतिवर्ष लोग बिना धर्म और विश्वास का भेद किए प्रार्थना करने आते थे, विभिन्न धर्मों के लोगों के सह–अस्तित्व का चित्रण किया गया है। इस महान परंपरा को जारी रखते हुए आज भी कश्मीरी लोग इन स्थलों पर प्रार्थना करने के लिए पहुंचते हैं। एकता की भावना आज भी जिन्दा है।

जम्मू–कश्मीर

Composite Culture

Kashmir, 'Paradise on Earth' is known for its landscape, lush green valley, sparkling streams, placid lakes, and snow-capped mountains. It also has Sufi Saints and Rishis who have contributed immensely to symbolize Kashmir for its composite culture.

The tableau of Jammu and Kashmir presents coexistence of the people of different faith by focussing on the existence of historic Gurudwara, Mosque and Temple in the vicinity of foothills of 'HARI PARVAT' – the fort built by Mughal Emperor Akbar, where people used to come to pray every year irrespective of faith and religion. In continuation of this noble tradition, Kashmiri people come to these shrines to pray even today. The spirit of unity lives on.

Jammu and Kashmir

11

केट्टुवल्लम

केरल की इस झांकी में 'केट्टुवल्लम' हाउस बोट को दर्शाया गया है जो कि पूरी तरह से कटहल के तनों को नारियल की मजबूत रस्सी से बांध कर एक बड़े बजरे के रूप में तैयार करके बनाया जाता है। इस नाव में कोई कील नहीं लगाई जाती तथा काजू के बीज को उबालकर बनाए गए गोंद से इसकी लिपाई की जाती है। प्रत्येक 'केट्टुवल्लम' दस्तकारी की एक उत्तम कृति होती है और यह न केवल वर्षों बल्कि पीढ़ियों तक चलती है। यह मानो एक तैरता हुआ 'इतिहास' है जिस पर बदलते का कोई प्रभाव नहीं पड़ा है।

इस झांकी के ट्रैक्टर भाग में 'कथकली' नृत्य की शैली को दर्शाया गया है।

केरल

Kettuvallam

The tableau of Kerala depicts 'Kettuvallam' – House Boat, made entirely of Jackwood plants tied (Ketu) together with strong coir rope to form a huge barge (Vallam). The boat is constructed without using a single nail and is coated with a special resin obtained from boiling cashew kernels. Each a masterpiece of intricate craftsmanship, the 'Kettuvallam' lasts, not for years, but for generations. It is a floating 'history', which the changes of time have not been able to drown.

The tractor portion of the tableau portrays the classical dance form 'Kathakali'.

Kerala

मांडू

मध्य प्रदेश की झांकी में मांडू के प्रसिद्ध 'जहाजमहल' को दर्शाया गया है। 'रंग महल' के रूप में विख्यात इस जहाज महल को गयासुद्दीन खिलजी ने पन्द्रहवीं शताब्दी में बनवाया था। इस झांकी में जहाज महल के प्रथम तल की अनुकृति इस क्षेत्र के मनमोहक संगीत के लिए अच्छी पृष्ठभूमि प्रदान करती है।

इस झांकी के ट्रैक्टर भाग में रानी रूपमति के साथ घोड़े पर सवार बाज बहादुर को दर्शाया गया है जिसे मालवा की मिनिएचर पेंटिंग से लिया गया है। बाज बहादुर तथा उनकी प्रेयसी रानी रूपमती की प्रेम कहानी दो संस्कृतियों के मिलन का प्रतीक है। सदियों से चली आ रही यह प्रेम की परंपरा आज भी विद्यमान है।

मध्यप्रदेश

Mandu

The tableau of Madhya Pradesh depicts the famous 'Jahaz Mahal' in Mandu. Also known as 'Pleasure Palace', Jahaj Mahal was built by Gayasuddin Khilji in 15th century. The replica of the first floor of Jahaj Mahal presented in the tableau provides a lovely backdrop for the soul stirring music of the area.

The tractor portion of the tableau showcases Baz Bahadur riding with his consort Rani Roopmati derived from miniature painting of Malwa. The love story of the royal lovers Baz Bahadur and his beloved Rani Roopmati symbolize the unification of two cultures. Love once dreamt still survives the ravages of time.

Madhya Pradesh

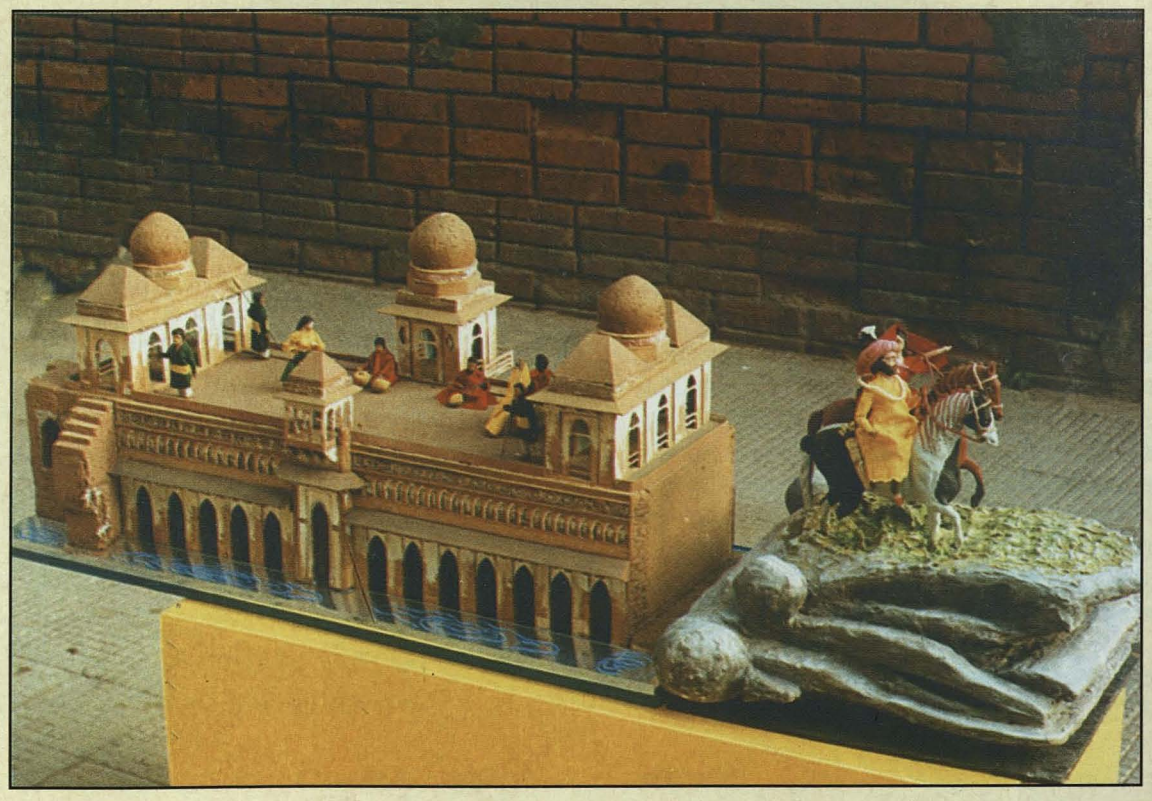

गोविंदा आला

महाराष्ट्र की इस झांकी में 'अदृश्य की संकल्पना' को जनप्रिय श्री कृष्ण के जन्म के रूप में दर्शाया गया है। यह लोकप्रिय उत्सव प्रत्येक वर्ष भाद्रपद माह के कृष्ण पक्ष के आठवें दिन मनाया जाता है। यह जन्माष्टमी और 'गोविंदा' के नाम से भी जाना जाता है। लोग आधी रात में उस घड़ी पर मन्दिरों में प्रार्थना करते हैं जब वे पैदा हुए थे। महाराष्ट्र के इस फ्लोट में मुंबई शहर की मध्यवर्गीय पृष्ठभूमि में लोगों के उत्साह और खुशी को दर्शाने का प्रयास किया गया है।

इस झांकी की पृष्ठभूमि में मुंबई तथा महाराष्ट्र के अन्य भागों में लड़के लड़कियों को एक दूसरे के कंधे पर चढ़कर 'गोविंदा आला रे आला' का गायन करते हुए दही, फल और शहद से भरी मटकी तक पहुंचने का प्रयास करते दिखाया गया है, जिसे काफी ऊंचे स्थान पर बांधा गया है। इस फ्लोट में जीवन की खुशियां चित्रित हैं। झांकी के ट्रैक्टर भाग में ग्रामीण महाराष्ट्र के प्रतीक दो वृषभों को दर्शाया गया है।

महाराष्ट्र

Govinda Ala

The tableau of Maharashtra presents the 'concept of the unseen' in the form of the popular young Lord Krishna's birth. This popular event, takes place on the eighth day of Krishna Paksha of the Bhadrapada month every year. It is also known as 'JANMASHTAMI' and also 'Govinda'. People offer prayers in temples at mid night the hour at which he was born. The float from Maharashtra attempts to capture the spirit of gaiety and festivity of this occasion in the background of a middle class setting in the city of Mumbai.

In the back drop of this are shown Mumbai and other parts of Maharashtra where boys and young girls climb on each other's shoulder chanting 'Govinda Ala Re Ala' and making human pyramids to reach the pot (Matki) of yoghurt, fruits and honey which is tied at a high place. Life's little luxuries are frozen in this float. The tractor portion of tableau shows two bulls depicting the rural Maharashtra.

Maharashtra

आर्किड और तितलियां

मेघालय अर्थात् 'बादलों का देश' नाना प्रकार की तितलियों और आर्किडों से भरा पड़ा है। तितलियों की भरमार के कारण इसे 'तितलियों का देश' भी कहा जाता हैं इस राज्य में ब्लू पेंसी, ऑरेंज ओक लीफ, ब्लू एडमिरल, पेंटेड लेडी, ऑटम लीफ आदि विभिन्न प्रकार की तितलियां हैं। इस राज्य के विभिन्न पहाड़ों और जंगलों में विभिन्न प्रकार के आर्किड भी बहुतायत में मिलते हैं।

मेघालय की झांकी में राज्य की आकर्षक हरियाली और तितलियों का चित्रण है। बादलों के देश में ईश्वर ने प्रचुर सुंदर और रंगबिरंगे उपहार प्रदान किए हैं।

मेघालय

Orchids and Butterflies

Meghalaya meaning "the land of the clouds" abounds in many exotic varieties of butterflies and orchids. The variety of butterflies has also earned Meghalaya the epithet - **'Land of Butterflies'**. 'Blue Pansy', the 'Orange Oak leaf', the 'Blue Admiral', the 'Painted Lady', the 'autumn leaf' are some of the exotic varieties of the butterflies available in the state. The state also has numerous varieties of exquisite orchids all over its hills and forests.

The tableau of Meghalaya depicts both the exotic flora and also the butterflies of the State. In the lands of the clouds, god's gift has been bountiful, beautiful and also colourful.

Meghalaya

वेणु शिल्प

मिजोरम–ऊँचाई पर रहने वालों की भूमि–जो कि भारत के उत्तर–पूर्वी सीमा पर स्थित है, मिजो लोगों की विशिष्ट तथा विविधता लिए हुए कला एवं शिल्प का स्थान है। प्रकृति के प्रचुर उपहारों का उपयोग करके मिजो दस्तकारों द्वारा वर्षों से बांस के कामचलाऊ टुकड़ों को कलाकृतियों में बदला जा रहा है। नई जरूरतों, जीवन शैली तथा बदलते समय के अनुरूप सृजनशीलता को अपनाने की क्षमता मिजो लोगों की मौलिकता तथा शक्ति का प्रतीक है, जिनका कला तथा शिल्प से गहरा नाता है। शिल्प तो मिजो लोगों की जीवन शैली का अभिन्न हिस्सा है।

मिजोरम की झांकी में 'चेराव नृत्य' को भी प्रस्तुत किया गया है जो रंगारंग मिजो नृत्यों में से एक है। बांस इस नृत्य का अभिन्न अंग है, यहाँ तक कि इन नृत्यों को आमतौर पर 'बांस–नृत्य', भी कहा जाता है। मानव और प्रकृति एक हैं, तथा वे हमारे देश के इस रमणीक भाग में एक ही रहेंगे।

मिजोरम

Bamboo Crafts

Mizoram – land of the highlanders – tucked in the North-Eastern fringe of India is a home to the distinct and vibrant arts and crafts of the Mizos. Drawing from nature's abundant gifts, the Mizo handicrafts have over the years transformed from mere functional pieces into works of art and vice-versa. This ability to improve and adapt creativity to new needs, lifestyles and changing times has to do with art and craft being an anchor of originality and strength to the Mizos. The crafts form an intrinsic part of Mizo life-style.

The tableau of Mizoram also presents the 'Cheraw' dance, one of the most colourful Mizo Dance'. Bamboos are integral part of this dance – so much so that the dance is also popularly called as 'Bamboo dance'. Man and nature are one, and they will remain one in this beautiful part of our country.

Mizoram

शीशमहल पटियाला (पदक दीर्घा)

पदक दीर्घा, शीश महल, पटियाला में पुरस्कारों, सम्मानों, और पदकों का एक संग्रह है। अपनी प्रचुरता और विभिन्नता में यह संग्रह शायद विश्व में बेमिसाल है। इस दीर्घा में 3200 से अधिक पुरस्कार, सम्मान और पदक हैं। इस संग्रह की विशिष्टता तथा शान इस तथ्य से स्पष्ट है कि इस संग्रह में सात शताब्दियों का इतिहास समाहित है तथा भौगोलिक दृष्टि से यह छह महाद्वीपों में फैला है।

इस संग्रह में दो ऐसे पदक हैं जो महाराजा रणजीत सिंह से संबन्धित हैं, जोकि शायद पहले भारतीय शासक हैं जिन्होंने पदक की शुरुआत की थी। पंजाब की झांकी में सन् 1821 के बाद तथा सन् 1837 से पूर्व प्रदान किए गए पदकों को दर्शाया गया है। शीश महल, पटियाला की गैलरी में यह 'आर्डर आफ रणजीत सिंह' पदक है। बहादुर कभी मरते नहीं वे केवल आंखों से ओझल हो जाते हैं।

पंजाब

Sheeshmahal Patiala (Medal Gallery)

The medal gallery, Sheesh Mahal Patiala houses one of the largest collections of Orders, Decorations and Medals. The collection is perhaps unmatched in the world in its richness and variety. There are more than 3200 Orders, Decorations and Medals in this Gallery. The enormity and magnificence of this collection is apparent by the fact that the collection covers history of over seven centuries and geographically span to six continents.

There are two medals in this collection, which relate to Maharaja Ranjit Singh, probably the first Indian ruler to institute a medal. The tableau of Punjab showcases the medal that was awarded after AD 1821 and prior to AD 1837 was the 'Order of Ranjit Singh' in the medal gallery of Sheesh Mahal, Patiala. The brave do not die they only fade.

Punjab

उनाकोटी

त्रिपुरा में स्थित पौराणिक तथा पुरात्विक महत्व के स्थल 'उनाकोटी' का बंगाली में अर्थ है 'एक करोड़ से एक कम'। चैत्र के महीने में अशोकाष्टमी के अवसर पर वर्ष में एक बार यहाँ मेला लगता है। करीब के पहाड़ी ढलानों के आस–पास झाड़ियों के बीच, कुछ घनी झाड़ियों में ओर कुछ आधी दबी हुई बहुत सी हिंदू देवी–देवताओं की मूर्तियां बिखरी दिखाई देती हैं। समय भी त्रिपुरा की ऐतिहासिक विरासत को नहीं छुपा पाया है। गुब्बारे में इस प्रछन्न इतिहास को पुनर्जीवित किया गया है।

त्रिपुरा की झांकी में केंद्रीय रूप से शिव जी के सिर को और विशालकाय गणेश जी को दर्शकों के समक्ष प्रस्तुत किया गया है।

Unakoti

An important mythological and archaeological site in Tripura, 'Unakoti' is a Bengali term which means 'one less than a crore'. A religious fair takes place once a year on the occasion of Ashokastami in the month of Chaitra. The place is about 176 Km. from Agartala. A large number of images of Hindu gods and goddesses are found scattered on the rocky walls of the hill slopes amidst bushes; some hidden beneath the rich undergrowth and other half-buried in the ground. Times have not been able to hide Tripura's historical legacy. From the hidden ruins histoı y is once again retold in this float.

The tableau of Tripura showcases the central Shiva head and gigantic Ganesha figure inviting the attention of the visitors.

त्रिपुरा

Tripura

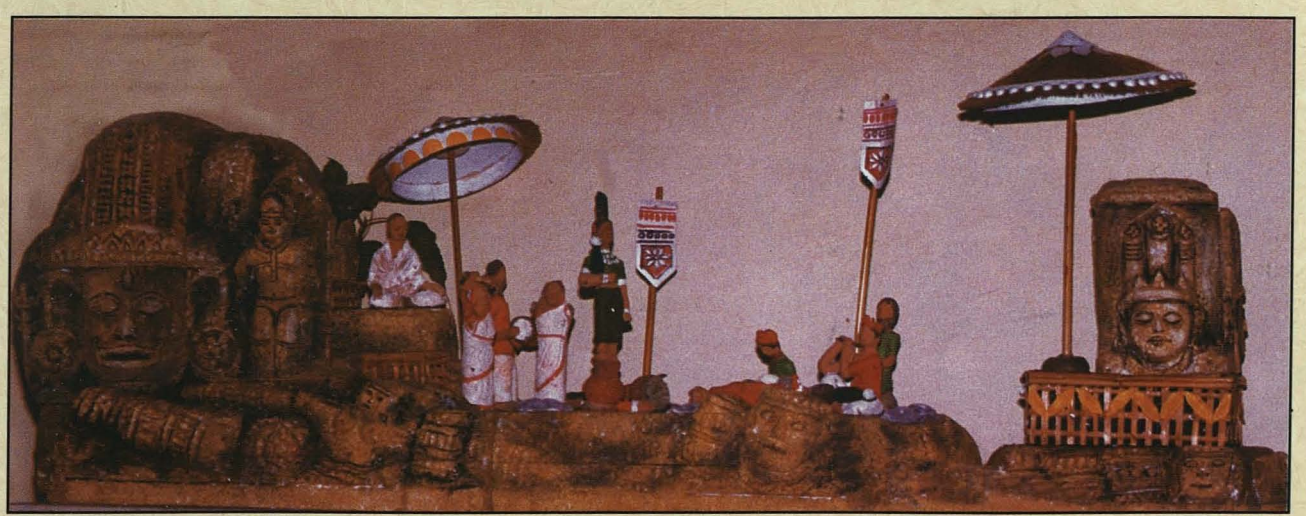

होली

रंगों के त्यौहार 'होली' अथवा 'होलिकोत्सव' को मार्च के महीने में बसंत के आगमन पर मनाया जाता है। पौराणिक मूल के इस त्यौहार को पूरे भारत में किसी न किसी रूप में मनाया जाता है। पुराणों के अनुसार यह त्यौहार बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश विशेषकर मथुरा–वृंदावन की होली तो पूरी दुनियां में मशहूर है।

उत्तरप्रदेश की इस झांकी में महिलाएं–पुरुष और बच्चे एक–दूसरे पर रंगों की बौछार करते दिखाई दे रहे हैं। यहाँ जाति–धर्म, वर्ग अथवा उम्र का कोई भेदभाव नहीं – जोकि भारत की रंगबिरंगी संस्कृति का प्रतीक है। नाना रंगों से एक–दूसरे को रंगने की परिपाटी संभवतः खुशी प्रकट करने के लिए शुरु हुई होगी, जोकि बसंत के अवसर पर प्रकृति द्वारा पूरे वातावरण में खुले दिल से बिखेरे गए असंख्य रंगों का भी प्रतीक है। होली के रंग प्यार, भाई–चारे और राष्ट्रीय एकता का संदेश देते हैं। रंग जीवन की एकरसता में जीवंतता ले आते हैं।

उत्तरप्रदेश

Holi

'Holikotsava' or 'Holi' the festival of colours having mythological origin is celebrated all over India in one form or the other in the month of March coinciding with spring. Mythologically, the festival symbolises the victory of good over evil. Holi being celebrated in the Western Uttar Pradesh, especially in Mathura – Vrindaban is well-known world-over.

The tableau of Uttar Pradesh shows men, women and children playing Holi by splashing colours on each other irrespective of their age, cast, creed and religion symbolising the kaleidoscopic culture of the Indian society. The tradition of splashing one another with vibrant colours would have started just to express the feeling of gay and reflect myriad colours profusely splashed all over in Nature during the Spring. The colours of Holi give the message of love, brotherhood and national unity. Colour enlivens existence from its dull monotony.

Uttar Pradesh

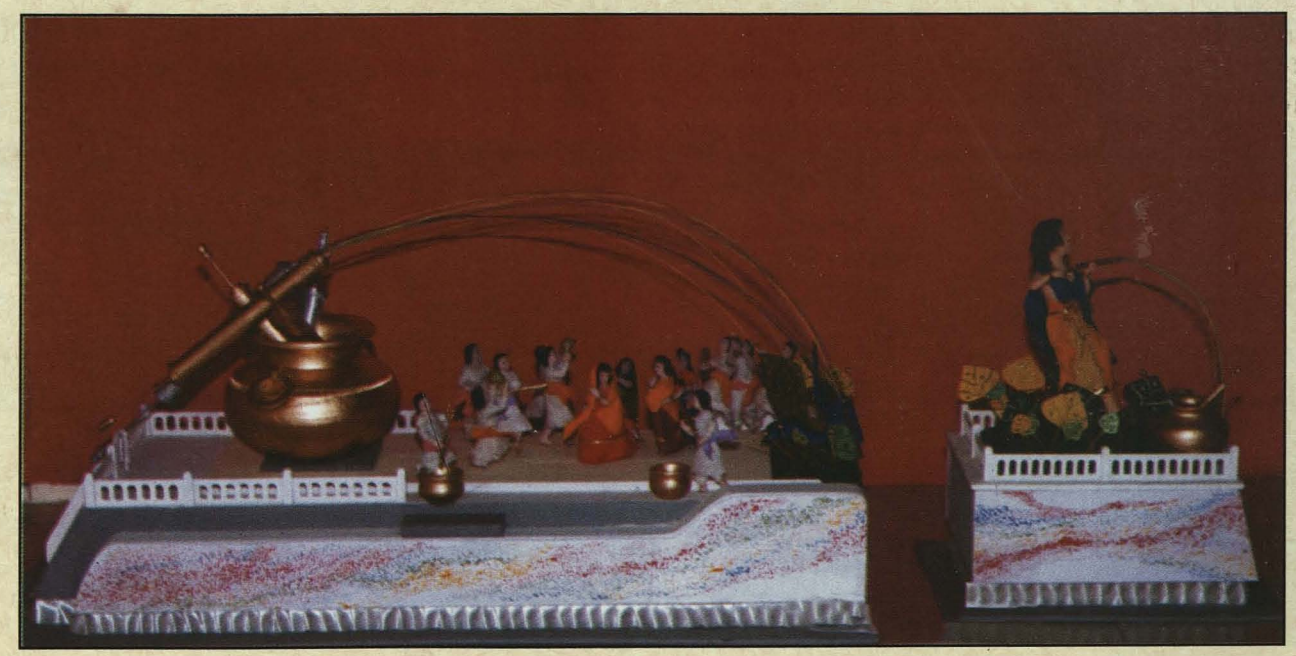

घर

केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग की इस झांकी में हिमालय की बर्फ से ढकी चोटियों से गंगा के मैदानी भागों और दक्षिण भारत के समुंद्री तटों तक देश के विभिन्न भागों में विशिष्ट शैलियों में बने परंरागत घरों को दिखाया गया है। कश्मीर की मनोहर घाटी से देश के पूर्वी भाग में फैली पहाड़ियों तक उस क्षेत्र की भौगोलिक विशेषताओं के आधार पर घरों का आकार बदलता रहा है।

झांकी के ट्रैक्टर भाग में भारत देश के विभिन्न भागों में बने निवास–स्थानों/घरों की विविधता दिखाई गई है। इस झांकी में सच्चे मायने में एकता में अनेकता की संकल्पना भी दर्शाई गई है। संपूर्ण झांकी को प्राकृतिक छटा बनाए रखते हुए फूलों से बनाया गया है और इसमें विभिन्न प्रकार के घरों सहित विभिन्न क्षेत्रों की सुन्दर झलक दिखाने के लिए इसे बड़ी मेहनत से बनाया गया है। फूलों से बने घर केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग के कर्मचारियों और इंजीनियरों को समर्पित हैं।

केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग

Houses

The tableau of the Central Public Works Department depicts the distinguished styles of traditional houses in different parts of the country from the snow-clad peaks of the Himalayas to the flat plains of the Gangetic, to the coastal shores of the South. From the exotic valley of Kashmir to the rolling hills in the East, houses have taken different shapes based on the physical features of the region.

The tractor portion of the tableau depicts varieties of homes/houses across India. The tableau also depicts the concept of diversity in unity in true sense of the term. The entire tableau is made of flowers retaining the natural hue and painstakingly assembled to give it the most exquisite depiction of the various regions along with the different types of houses. Houses in flowers are the tribute to the men and Engineers of the C.P.W.D.

Cental Public Works Department

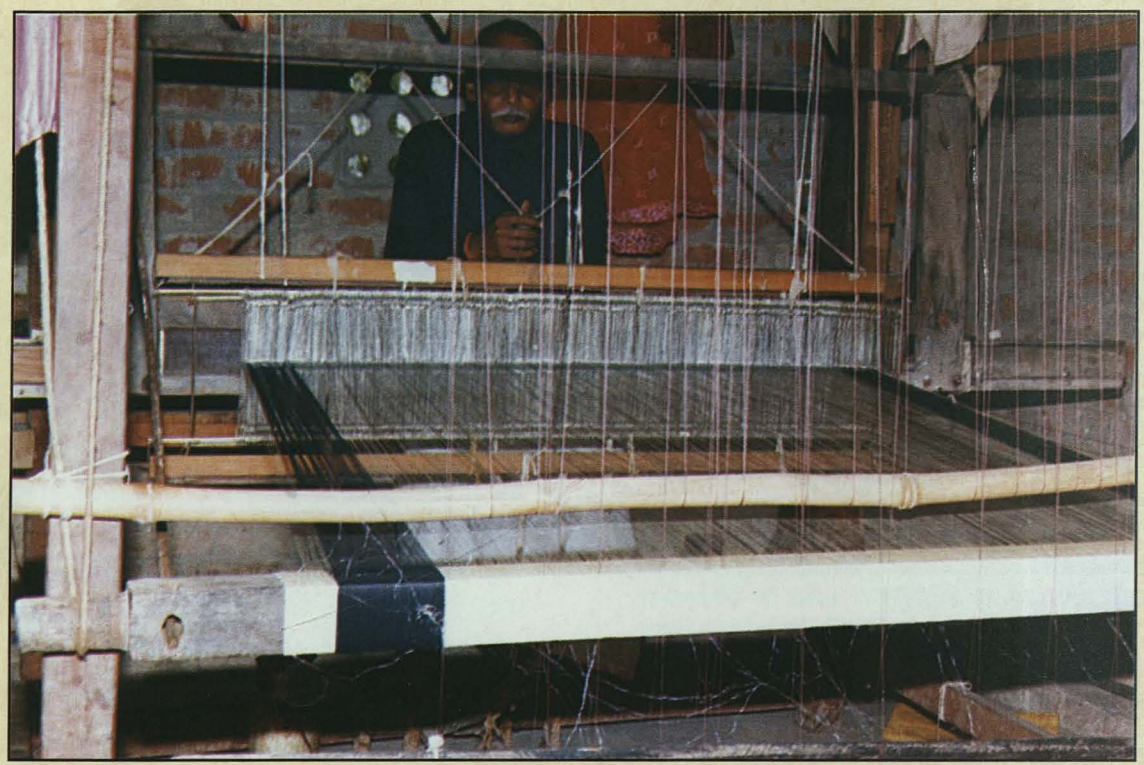

खादी

खादी तथा ग्रामोद्योग आयोग द्वारा ग्रामीण भारत में अपनी पुरज़ोर मौजूदगी दर्ज़ की गई है। इस माध्यम के ज़रिए भारत का विकास हुआ तथा उसे आज़ादी मिली। खादी तथा ग्रामोद्योग आयोग की इस झांकी में ग्रामीण, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक मोर्चों पर हमारे जीवन में खादी का महत्व दिखाया गया है। कृषि ग्राम्य उद्योगों को महत्व देते हुए, स्वतंत्र भारत की भावना का पोषण करते हुए ग्रामीण भारत के उत्थान में खादी तथा ग्राम उद्योग आयोग ने उत्प्रेरक की भूमिका निभाई है। मौजूदा परिदृश्य में, गांधीजी और आत्म–निर्भर भारत की उनकी परिकल्पना बहुत अधिक प्रासंगिक है तथा खादी और ग्रामोद्योग आयोग आज भी उसी भावना की रहनुमाई करता है।

झांकी के ट्रैक्टर भाग में खादी, बेंत और बाँस, सर्वोदय उत्पाद, मधु–मक्खी पालन, चमड़ा तथा खाद्य प्रसंस्करण आदि दिखाए गए हैं। इस वर्ष खादी तथा ग्रामोद्योग आयोग अपनी हीरक जयंती मना रहा है।

कृषि तथा ग्रामीण उद्योग मंत्रालय

Khadi

Khadi and Village Industries Commission (KVIC) has its strong presence in rural India. India grew and found freedom through this medium. The tableau of KVIC highlights the importance of Khadi in our lives in rural, social, economical and cultural fronts. KVIC is a catalysing factor in the growth of rural India, giving thrust to agro-rural industries and nurturing the spirit of a free India. In the present scenario, the relevance of Gandhiji and his vision of self-reliant India is very much valid and KVIC still pioneers that spirit today.

The tractor portion of the tableau focuses on the khadi, cane and bamboo; sarvodaya products, bee keeping, leather, food processing etc. This year KVIC is celebrating its Diamond Jubilee.

Ministry of Agro and Rural Industries

'बिश्नोई' और 'चिपको'

पर्यावरण एवं वन मंत्रालय की विषय–वस्तु प्रकृति के प्रति प्रेम, आदर और श्रद्धा तथा वन–संरक्षण की भारतीय परम्पराओं पर आधारित है।

इस झांकी में सन् 1730 में राजस्थान के बिश्नोई गांव के लोगों को बलिवेदी पर अपने प्राणों की आहुति देकर हरे पेड़ों को गिराए जाने से बचाते हुए दिखाया गया है। इस उत्कृष्ट परंपरा की अनुगूँज हिमालय में गोपेश्वर गांव (गढ़वाल) की ग्रामीण महिलाओं द्वारा चलाए गए 'चिपको आंदोलन' में मिलती है। हरे पेड़ों को काटने के लिए कटान करने वालों के आने पर इन्होंने पेड़ों से लिपटकर उनकी वाणिज्यिक कटाई को पूरी तरह से रोक दिया। इस साधारण किंतु कारगर कार्रवाई से अंततः 12,000 वर्ग कि॰मी॰ का संवेदनशील जलागम क्षेत्र बचा लिया गया। 'बिश्नोई' तथा 'चिपको' आंदोलनों के माध्यम से यह झांकी प्रकृति के संरक्षण का संदेश देती है, जोकि आज के संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

पर्यावरण एवं वन मंत्रालय

'Bishnoi' and 'Chipko'

The theme of the Ministry of Environment and Forest encompasses Indian traditions of love, respect and the reverence for nature and the conservation of the forest.

The tableau depicts, the people of Bishnoi village in 1730 in Rajasthan protecting the green trees from felling by laying their lives at the altar. This noble tradition found echo in 'Chipko' movement, spear-headed by the women folk of the Gopeswar village (Garhwal) in Himalayas. They effectively stopped commercial felling of trees by hugging the trees when lumbermen arrived to cut them. This simple, yet effective action eventually saved 12,000 square Km. of sensitive water catchment area. Through 'Bishnois' and 'Chipko' movements the tableau carry forward the message of conservation of nature, which is of utmost importance in the present day context.

Ministry of Environment and Forest

पुस्तक–वर्ष

पुस्तकों के जादू से मानव–जाति कभी भी अछूती नहीं रह सकी है। सदियों से इसने आदमी की उसके सपनों और विचारों, उसकी उम्मीदों और आकांक्षाओं का ताना–बाना बुनने में सहायता की है। अपने आवरणों में सुरक्षित यह प्राचीन ज्ञान का भंडार है, जिससे भावी जीवन का निर्माण किया जा सकता है। पुस्तकें न केवल सही परिप्रेक्ष्य में चीजों को समझने में हमें समर्थ बनाती हैं, बल्कि हमें सामाजिक और आर्थिक शोषण से लड़ने के लिए तैयार भी करती हैं, हमें बौद्धिक रूप से शक्तिशाली बनाती हैं तथा हमारी राष्ट्रीय संस्कृति के प्रति हममें गर्व की भावना भर सकती हैं।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय की यह झांकी मानव–जीवन पर पठन–पाठन की आदत का लाभदायक प्रभाव दर्शाती है। सम्पूर्ण झांकी पुस्तकों और पठन–पाठन की आदतों के बारे में है। पुस्तक–वर्ष का नारा– 'सभी के लिए पुस्तकें और पुस्तकों के लिए सभी' जहाँ पुस्तकों की प्रासंगिकता बतलाता है वहीं पुस्तक–वर्ष के दौरान जागरूकता अभियान भी शुरु करता है।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय

The Year of Books

The magic of books has never ceased to charm humanity. Through the ages it helped man knit his dreams and thoughts, his hopes and aspirations. Secured within its covers, it brings ancient wisdom, with which one can build the edifice of the future. Books not only enable us to understand things in the correct perspective but also equip us to fight against social and economic exploitation, empower us intellectually and can imbibe in us a sense of pride in our national culture.

The tableau of Ministry of Human Resource Development demonstrates the salutary effect of reading habit on the human life. The entire tableau is about books and reading habits. The slogan for the **Year of Books – 'Books for All and All for Books'** signifies the relevance of the books and generates awareness campaign during the **Year of Books.**

Ministry of Human Resource Development

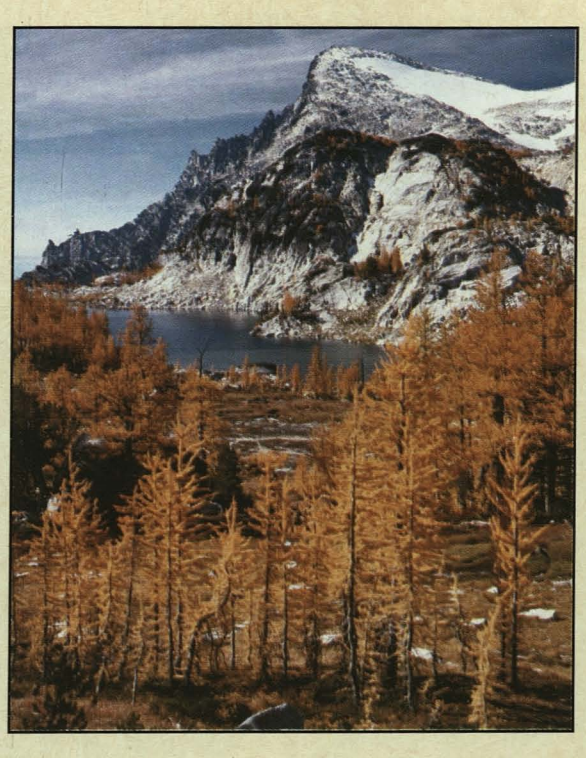

अंतरराष्ट्रीय पर्वत वर्ष

भारत में सबसे वृहत तथा सबसे अधिक भिन्नता लिए हुए पर्वत–श्रृंखलाएं मौजूद हैं, जो जम्मू–कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तरांचल, सिक्किम, पश्चिम बंगाल और अरुणाचल प्रदेश से होती हुई पश्चिम में जम्मू–कश्मीर से पूर्व में अरुणाचल प्रदेश तक फैली हुई हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ की ओर से वर्ष 2002 को ''अंतरराष्ट्रीय पर्वत वर्ष'' घोषित किए जाने के बाद पर्वतों पर फैले हुए प्राकृतिक खजाने को संरक्षित किए जाने की जरूरत है ताकि पर्वतों के अछूते सौंदर्य, सुन्दरता और आकर्षण को अक्षुण्ण बनाए रखा जा सके।

भारतीय पर्वतारोहण फाउंडेशन की झांकी में पर्वतों के संरक्षण में सामुदायिक सहयोग के महत्व पर जोर दिया गया है। ट्रैक्टर पर लोगों के एक छोटे से समूह को पारिस्थितिकीय संतुलन बनाए रखने के लिए पौधा–रोपण करते हुए दिखाया गया है जोकि वनों के लगातार कटाव के कारण अत्यधिक असंतुलित हो गया है। झांकी में कुछ लोगों को प्लास्टिक बैंगों, टिन के डिब्बों इत्यादि गैर–जैवक्षरणीय सामग्री को चुनकर पर्वतों को साफ करते हुए दिखाया गया है ताकि भावी पीढ़ियों के लिए पर्वतों को संरक्षित रखा जा सके।

भारतीय पर्वतारोहण फाउंडेशन

International Year of Mountains

India has the largest and the most diverse mountain ranges, extending from Jammu and Kashmir in the west to Arunanchal Pradesh in the east running through the States of J & K, Himachal Pradesh, Uttaranchal, Sikkim, West Bengal and Arunanchal Pradesh. In the wake of United Nations declaring the Year 2002 as "International Year of Mountains", there is need to preserve the treasure of the nature spread on the mountains so as to ensure the pristine beauty, sheer charm and attraction of the mountains.

The theme of Indian Mountaineering Foundation's tableau highlights the importance of community involvement in the conservation of the mountains. In the tractor, a small group is shown planting trees to maintain the eco-balance which has been seriously disturbed on account of continuing de-forestation. The tableau shows a few persons cleaning the mountains by removing non-biodegradable materials like plastic bags, tin cans etc. to conserve the mountains for the coming generations.

Indian Mountaineering Foundation

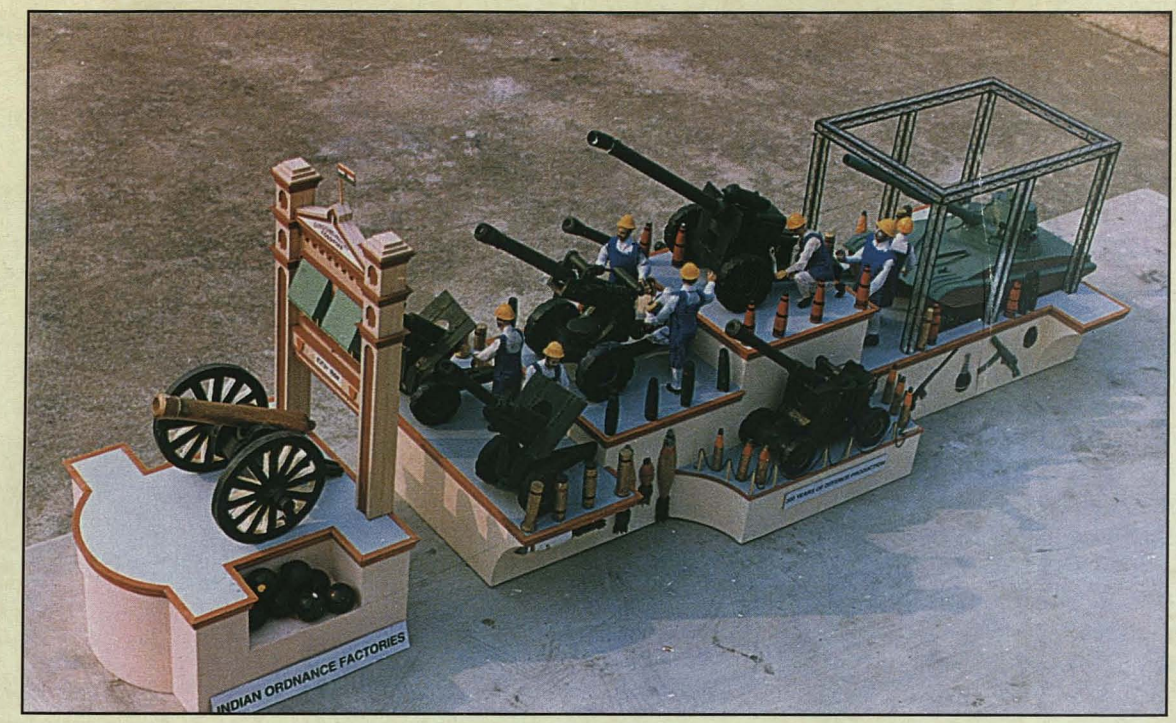

प्राचीनतम् तोप निर्माणीः काशीपुर

बंगाल के काशीपुर में सन् 1802 में पहली आयुध निर्माणी स्थापित किए जाने और बाद के वर्षों में 38 और आयुध निर्माणियां स्थापित होने के बाद भारतीय आयुध निर्माणी संगठन के पास रक्षा उत्पादन के क्षेत्र में दो सौ वर्षों का विशिष्ट अनुभव है।

आयुध निर्माणी बोर्ड की झांकी में संगठन के विकास और पिछले दो सौ वर्षों के दौरान राष्ट्र के लिए इसकी सेवा को प्रतीकात्मक रूप में प्रदर्शित किया गया है। इसमें हस्तशिल्प द्वारा निर्मित तोपों से लेकर अत्याधुनिक मशीनों से बनी तोपों का विकास क्रम मौजूद है। ट्रैक्टर का अगला भाग दो सौ वर्ष पुरानी ऐतिहासिक तोप एवं गोला निर्माणी का गेट और सशस्त्र सेनाओं और आयुध निर्माणी के कामगारों के बीच भाई–चारे को प्रदर्शित करता है, जिसने भारत आयुध निर्माणियों को "रक्षा का चतुर्थ अंग" नामक उपनाम दिया है।

रक्षा मंत्रालय

Oldest Gun Factory: Cossipore

With the first Ordnance Factory being set up at Cossipore in Bengal in 1802 and the subsequent addition of 38 Ordnance Factories over the years, the Indian Ordnance Factories (IOF) Organisation possess the unique distinction of 200 years' experience in defence production.

The tableau of Ordnance Factories Board shows in symbolic form the growth of the organisation and its services to the nation for the last two centuries. It showcases the evolution of guns from handcrafted items to those made by the state-of-the-art machines. The front portion of the tractor depicts the historic 200 years old Gun and Shell Factory gate and the brotherhood between the armed forces and Ordnance Factory workers, which has earned the IOFs the sobriquet 'Fourth Arm of Defence'.

Ministry of Defence

पुरातनता बनाम आधुनिकता

सामान्य व्यक्ति के लिए यातायात के मुख्य माध्यम तथा प्रमुख उद्योग के रूप में रेल राष्ट्र के जीवन में उल्लेखनीय भूमिका अदा करती है। रेलवे के पास सर्वोत्तम आधारभूत संरचना होने के कारण, भारतीय रेल आज भारत के आधुनिकता की ओर बढ़ते कदमों को सहयोग प्रदान करने में उत्कृष्टता की नई बुलंदियों को छू रही है।

रेल मंत्रालय की झांकी भारतीय रेल की पुरातन समय से आधुनिक समय तक की यात्रा को प्रदर्शित करती है। ट्रैक्टर पर भारतीय रेल की अपनी गौरवशाली विरासत और 1855 में निर्मित प्राचीनतम् भाप के इंजन 'द फेयरी क्वीन' को दिखाया गया है। प्राचीनतम् कार्यरत् भाप का इंजन होने के कारण गिनीज बुक आफ वर्ल्ड रिकार्डस् में स्थान पाते हुए 'द फेयरी क्वीन' ने भारत के लिए गौरव अर्जित किया है। ट्रैक्टर के पिछले हिस्से में ''अत्याधुनिक'' माइक्रोप्रोसेसर नियंत्रित उच्च अश्वक्षमंता के 3 फेज ड्राइव डब्ल्यू. ए. पी. (यात्री) और डब्ल्यू. ए. जी. (माल) इलेक्ट्रिक इंजनों को प्रस्तुत किया गया है जिससे रेल को उच्चतर और अधिक प्रभावी पैमाने पर प्रचालन क्षमता प्राप्त हुई है।

Antiquity to Modernity

As the principal mode of transport for the common man, and core industry, Railways play a significant role in the life of the nation. Having built a rail infrastructure that is comparable to the best, the Indian Railways (IR) today are poised to scale new heights of excellence to support India's march towards modernity.

The tableau of Ministry of Railways depicts the journey of Indian Railways from antiquity to modernity. On the tractor, IR shows its proud heritage and oldest steam engine 'The Fairy Queen' locomotive built in 1855, which is still in service between Delhi and Alwar. 'The Fairy Queen' has also won the pride to India by entering the **Guinness Book of World Records** being the oldest working steam locomotive. The rear portion of tractor introduces the "state-of-the-art" microprocessor controlled high horse power 3 phase drive WAP (Passenger) and WAG (Goods) Electric Locomotives enabling the railways the required drive for a higher and more efficient scale of operations.

Ministry of Railways

रेल मंत्रालय

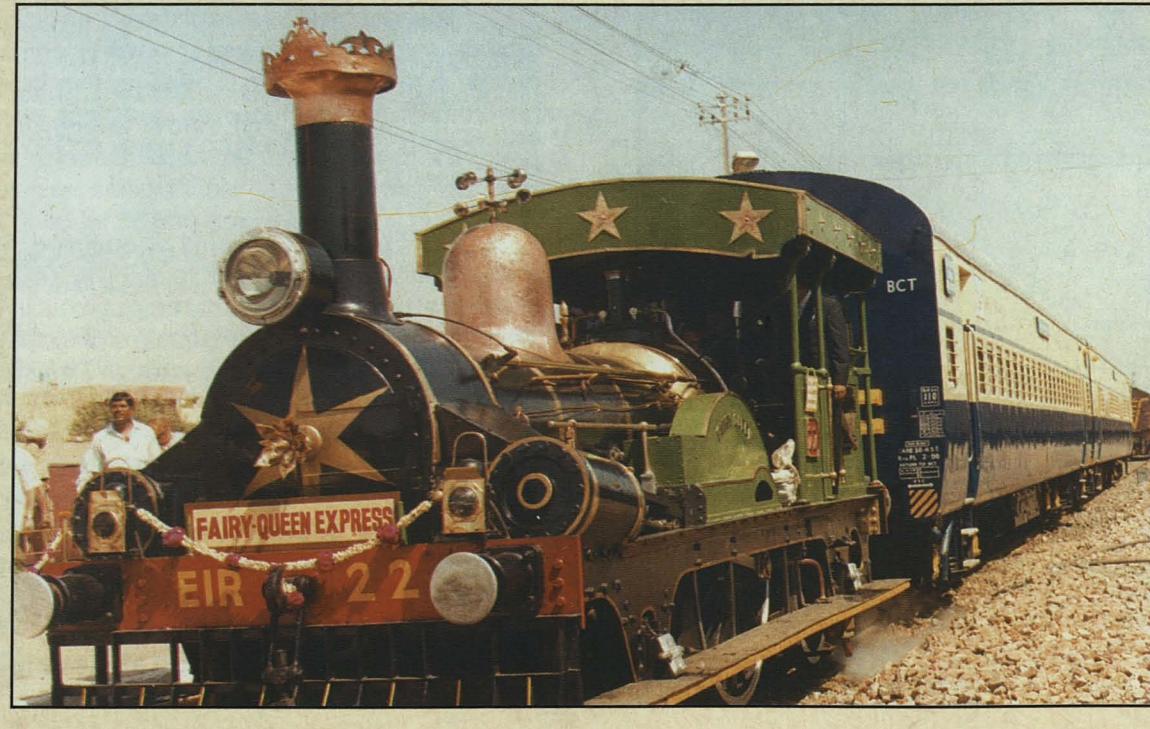

सम्पूर्ण ग्रामीण रोजगार योजना

देश ने कई क्षेत्रों में अच्छा विकास किया है, किन्तु गरीबी अभी भी गंभीर मुद्दा बनी हुई है। इस बात को ध्यान में रखते हुए सरकार ने 25 सितम्बर 2001 को सम्पूर्ण ग्रामीण रोजगार योजना के नाम से एक वृहत् योजना आरंभ की है।

सम्पूर्ण ग्रामीण रोजगार योजना केन्द्र द्वारा प्रायोजित योजना है जिसपर 10,000/– करोड़ रुपए का वार्षिक व्यय होगा और इसका उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में अतिरिक्त रोजगार उपलब्ध कराना है। लोगों की भागीदारी को सुनिश्चित करने के लिए इस योजना को पंचायती राज संस्थाओं के माध्यम से कार्यन्वित किया जाएगा।

ग्रामीण विकास मंत्रालय की झांकी में इस कार्यक्रम के विभिन्न पहलुओं, जैसे कि सूखा ग्रस्त क्षेत्रों में किए जा रहे विकासात्मक कार्यों, रोजगार के अवसर पैदा करने, पोषण सुरक्षा और खुशहाल ग्रामीण जिंदगी आदि को प्रस्तुत किया गया है।

ग्रामीण विकास मंत्रालय

Sampoorna Gramin Rojgar Yojana (SGRY)

The country has registered an impressive growth in many sectors. But poverty continues to remain a grave concern. Keeping this in view the government has launched an ambitious plan called Sampoorna Gramin Rojgar Yojana (SGRY) on 25th September 2001.

SGRY – a Centrally Sponsored Scheme involving an annual expenditure of Rs.10, 000/- Crores is aimed at providing additional employment in the rural areas. In order to ensure people's participation, the scheme will be implemented through Panchayati Raj institutions.

The tableau of Ministry of Rural Development depicts different aspects of this programme: developmental oriented works being done in the drought-affected areas, employment generation, nutrition security and happy rural life.

Ministry of Rural Development

उपग्रह एवं प्रक्षेपण यान

भारत ने 18 अप्रैल, 2001 को एस॰ एच॰ ए॰ आर॰ केन्द्र, श्री हरिकोटा से भू–समक्रमिक उपग्रह प्रक्षेपण यान का प्रथम सफल विकासात्मक परीक्षण प्रक्षेपण किया। भारत ने संचार, प्रसारण तथा मौसम उपग्रहों को 36,000 कि॰मी॰ की ऊंचाई पर भू–समक्रमिक कक्षा में छोड़ने की क्षमता का प्रदर्शन करते हुए भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम में उपलब्धि हासिल की है। जी॰ एस॰ एल॰ वी॰ के सफल परीक्षण प्रक्षेपण से भारत को केवल छह देशों, जिनके पास यह क्षमता है, के विशिष्ट क्लब में शामिल होने का गौरव प्राप्त हुआ है।

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन की झांकी में केन्द्रीय मीनार एवं इसके पीछे लगे मिशन नियंत्रण केन्द्र सहित अपने प्रक्षेपण आधार से उठते जी॰ एस॰ एल॰ वी॰ को 1:2 स्केल मॉडल में दर्शाया गया है। ट्रैक्टर में पोलर सेटलाइट लॉंच वेहीकल, ऑगुमेंटेड सेटलाइट लॉंच वेहीकल व सेटलाइट लॉंच वेहीकल–3 आदि अन्य सेटलाइटों के मॉडलों को भी दर्शाया गया है। ट्रैक्टर पर दिखाई देने वाले इसरो के नारंगी रंग के रोहिणी साउँडिंग रॉकेट का इस्तेमाल वायुमंडल तथा अन्य विज्ञानों में प्रयोग किए जाने के लिए किया जाता है।

अंतरिक्ष विभाग

Satellite and Launch Vehicles

India successfully carried out the first developmental test launch of its Geo-Synchronous Satellite Launch Vehicle (GSLV) on 18th April 2001 from SHAR Centre, Sriharikota. India achieved milestone in the Indian space programme, demonstrating the capability to launch communication, broadcasting and meteorological satellites into geo-synchronous orbit at a height of about 36,000 Kms. Successful test launch of GSLV enabled India to join an exclusive club of just six nations who have this capability.

The tableau of Indian Space Research Organisation (ISRO) depicts a 1: 2 scale model of GSLV lifting off from its launch pedestal with the umbilical tower and Mission Control Centre behind it. The tractor also showcases the model of other satellites: Polar Satellite Launch Vehicle (PSLV), Augmented Satellite Launch Vehicle (ASLV) and Satellite Launch Vehicle (SLV-3). The orange coloured Rohini Sounding Rockets of ISRO seen on the tractor are used for conducting experiments in atmosphere and other sciences.

Department of Space

दूरसंचार–भारत की जीवन–रेखा

दूरसंचार आज क्रांति का एक प्रमुख अग्रदूत है। यह देहाती क्षेत्रों में और अधिक स्पष्ट है जहाँ पर यह असीमित संपन्नता तथा प्रसन्नता ला रहा है।

झांकी में एक सामान्य से बड़े टेलीफोन अैर रिसीवर को दर्शाया गया है जो कि दूरसंचार क्रांति के महत्व को बताते हैं तथा इनके देश के दूरस्थ कोने तक पहुंचने का प्रतीक हैं। ट्रैक्टर में ग्लोब द्वारा दूर संचार की सहायता से विश्व का एक विश्व ग्राम के रूप में रूपांतरण दर्शाया गया है। उपग्रह जोड़ने वाले कारक का प्रतीक है। कंप्यूटर को सीखते तथा इसका इस्तेमाल करते ग्रामीण देहाती क्षेत्रों में इंटरनेट के माध्यम से दूरसंचार के कारगर इस्तेमाल को दर्शाते हैं। झांकी के बगल वाले पैनल में टेलीफोन के आविष्कारक ग्राहम बेल से शुरु करके दूरसंचार का इतिहास दिखाया गया है। झांकी में देश के ग्रामीण एवं दूर–दराज के क्षेत्रों में दूर–संचार के फायदों का भी विस्तार से चित्रण किया गया है।

दूरसंचार विभाग

Telecommunication - Lifeline of India

Telecommunication is ushering in a major revolution today. This is more evident in the rural areas where it is bringing in prosperity and happiness unlimited.

The tableau shows a larger than life telephone and receiver signifying the importance of the telephone as an instrument of telecom revolution and its reach in the remotest corners. In the tractor, the globe depicts the conversion of the world into a global village with the aid of telecommunications. The satellite symbolizes the connecting factor. While the villagers learning and utilizing a computer show the effective use of telecom through Internet in rural areas. In the side panel of the tableau, history of telecommunications is shown, beginning with Graham Bell, inventor of the telephone. Tableau also depicts the benefits of the telecom percolating down to the rural and remote areas of the country.

Department of Telecommunication

हथकरघा और हस्तशिल्प

आधुनिक भारत का आर्थिक मॉडल आज भी मजबूत ग्रामीण–शहरी संबंधों पर आधारित है और इसके केन्द्र में है हस्तशिल्प और हथकरघा। वस्त्र मंत्रालय द्वारा प्रस्तुत इस झांकी में इस शिल्प की शानदार कृतियों को दर्शाया गया है जोकि परंपरा तथा आधुनिकता का अनूठा संगम है और आज भी भारत के शहरों में अत्यंत लोकप्रिय है।

पश्चिम बंगाल के 'बांकुरा' टेराकोटा और कर्नाटक के काष्टलाख की मूर्ति वाली झांकी में भारतीय हस्तशिल्प की सबसे पुरानी कच्ची सामग्री मिट्टी और लकड़ी को प्रस्तुत किया गया है। पीछे की ओर ट्रैक्टर पर बस्तर की घंटा–धातु, आंध्र प्रदेश का बीदरी उद्योग, विभिन्न प्रकार के मिट्टी के बर्तन, कशीदाकारी, गलीचा तथा हथकरघा आदि भारतीय शहरी उत्पादों का प्रदर्शन किया गया है। ग्रामीण भारत का प्रतिनिधित्व करने वाले भाग में विभिन्न दस्तकार अपने मूल आवासों में कार्यरत् दिखाए गए हैं।

Handlooms and Handicrafts

The economic model of modern India still has as its base a strong urban – rural relationship and its handicrafts and handlooms provide the umbilical cord between the two. The tableau of Ministry of Textiles showcases the masterpieces of the crafts, which transcend the borders between tradition and modernity and still enjoy the mass appeal in urban India.

The tableaux led by terracotta 'Bankura' of West Bengal and a wood lacquer figure of Karnataka represent clay and wood, the two oldest raw materials for Indian crafts. The tractor behind displays the urbanised products: Bastar's bell metal, Andhra's Bidri work, various potteries, embroideries, carpets and handlooms of India. Tractor representing rural India, shows various craftsmen working in their original dwellings.

Ministry of Textiles

वस्त्र मंत्रालय

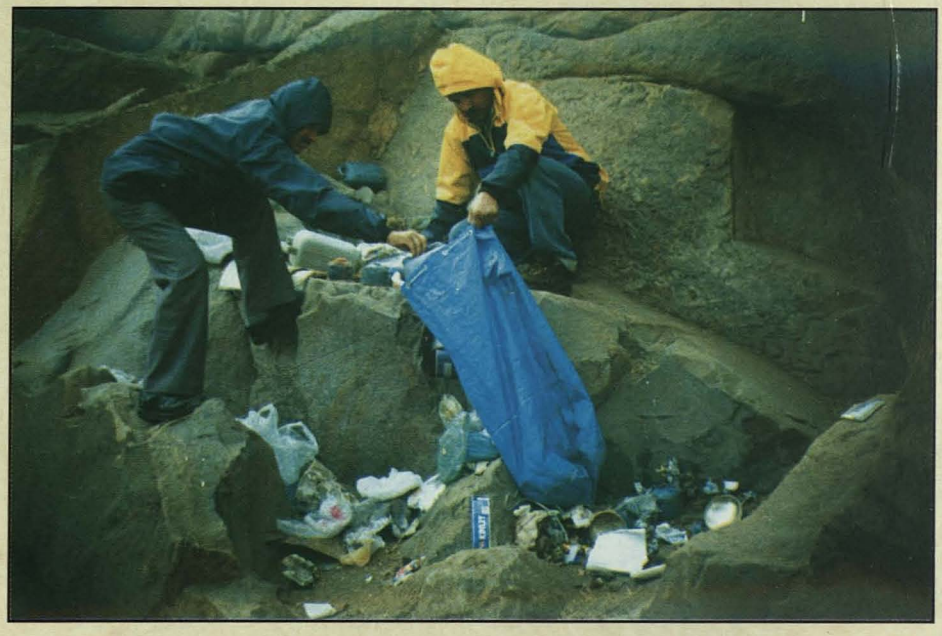

परिवेश–पर्यटन

पर्यटन मंत्रालय की इस झांकी का विषय है परिवेश–पर्यटन अर्थात् किसी क्षेत्र विशेष में मौजूद सांस्कृतिक विशेषताओं का और उसकी भौगोलिक सुंदरता का अध्ययन करने, प्रशंसा करने और उसका आनंद उठाने के नजरिए से कम आवागमन वाले क्षेत्रों का भ्रमण।

पर्यटन मंत्रालय की इस झांकी में परिवेश–पर्यटन के विभिन्न तत्वों अर्थात् जल, मरुस्थल, वायु और पर्वतों का चित्रण है। परिवेश–पर्यटन के विकास में सरकार, स्थानीय प्राधिकारियों, विकास करने वालों, पर्यटकों और स्थानीय समुदाय सभी की भूमिका है।

पर्यटन विभाग

Eco – Tourism

Eco-tourism, the theme of the tableau of Ministry of Tourism, is defined as travelling to a relatively undisturbed natural areas with the specific objective of studying, admiring and enjoying the scenic beauty as well as the existing cultural aspects found in the area.

The tableau of Ministry of Tourism depicts different elements of Eco-Tourism viz. water, desert, air and mountains. The government, local authorities, the developers, visitors and the local community are all key players in the development of Eco-Tourism.

Department of Tourism

31

बच्चों की प्रस्तुति

Children's Pageant

राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार, 2001 के विजेता बच्चे

नाम	राज्य
मास्टर सुरजीत सिंह*	जम्मू–कश्मीर
मास्टर अमरीक सिंह*	जम्मू–कश्मीर
कुमारी प्रेम कुंवर**(मरणोपरांत)	राजस्थान
मास्टर निखिल सिंह***(मरणोपरांत)	पश्चिम बंगाल
कुमारी अश्विनी कामथ****	कर्नाटक
कुमारी एंडी टेनीटा फर्नांडिस****	कर्नाटक
कुमारी श्रुति उलाल****	कर्नाटक
कुमारी श्रीदेवी दामोदर****	कर्नाटक
कुमारी निजल ओमप्रकाश पाटिल	महाराष्ट्र
मास्टर मेहुल सान्याल	मध्यप्रदेश
मास्टर के॰ जे॰ कामराजु	कर्नाटक
मास्टर कट्टा त्रिनाध	आंध्रप्रदेश
मास्टर आकाश सभरवाल	नई दिल्ली
कुमारी ऋतु सिंह तोमर	मध्यप्रदेश
कुमारी मिताली महेंद्र खानपुरकर	महाराष्ट्र
मास्टर सनथ बी॰	केरल
कुमारी शरवरी सुधीर माली	महाराष्ट्र
मास्टर जोनी लालननफेला	मिजोरम
मास्टर भूपेंद्र सिंह बेनीवाल	राजस्थान
कुमारी शिल्पा सतीश टामडाड्डी	कर्नाटक
मास्टर लालमुनसांगा (मरणोपरांत)	मिजोरम
मास्टर नरेन्द्र शांताराम भिताले	महाराष्ट्र
कुमारी ललिता देवी यादव	मध्यप्रदेश
मास्टर पुट्टा सोमेश्वर उर्फ सोमन्ना	आंध्रप्रदेश
कुमारी रेशमा मोहापात्रा (मरणोपरांत)	उड़ीसा

* भरत पुरस्कार
** गीता चोपड़ा पुरस्कार
*** संजय चोपड़ा पुरस्कार
**** बापू गयाधानी पुरस्कार

Winners of National Award for Bravery - 2001

Name	State
Master Surjeet Singh *	J & K
Master Amrik Singh *	J & K
Km. Prem Kunwar ** (Posthumous)	Rajasthan
Master Nikhil Singh *** (Posthumous)	West Bengal
Km. Ashwini Kamath ****	Karnataka
Km. Andy Tenita Fernandes ****	Karnataka
Km. Shruthi Ullal ****	Karnataka
Km. Sridevi Damodar ****	Karnataka
Km. Nijal Omprakash Patil	Maharashtra
Master Mehul Sanyal	Madhya Pradesh
Master K.J. Kamaraju	Karnataka
Master Katta Trinadh	Andhra Pradesh
Master Aakash Sabharwal	New Delhi
Km. Ritu Singh Tomar	Madhya Pradesh
Km. Mitali Mahendra Khanapurkar	Maharashtra
Master Sanath B.	Kerala
Km. Sharvari Sudhir Mali	Maharashtra
Master Johny Lalnunfela	Mizoram
Master Bhoopendra Singh Bainiwal	Rajasthan
Km. Shilpa Satish Tamadaddi	Karnataka
Master Lalhmunsanga (Posthumous)	Mizoram
Master Narendra Shantaram Bhitale	Maharashtra
Km. Lalita Devi Yadav	Madhya Pradesh
Master Putta Someshwar alias Sommanna	Andhra Pradesh
Km. Reshma Mohapatra (Posthumous)	Orissa

* Bharat Award
** Geeta Chopra Award
*** Sanjay Chopra Award
**** Bapu Gayadhani Award

स्कूली बालिकाओं का बैंड

स्कूली बच्चों के सांस्कृतिक कार्यक्रमों की झांकी सरकारी सहायता प्राप्त श्री गुरु तेग बहादुर स्कूल, शीश गंज और गुरु नानक सीनियर सेकेंडरी स्कूल, सब्जी मण्डी की बालिकाओं के बैंड के नेतृत्व में आगे बढ़ रही है। यह बैंड श्री चांद किशोर (बैंड मास्टर) द्वारा रचित 'स्वाती' धुन बजा रहा है।

ध्वज वाहक–बालिकाएं

बालिकाओं के इस मार्च पास्ट में सर्वोदय कन्या विद्यालय, समालखा; सर्वोदय कन्या विद्यालय, महिपालपुर; राजकीय कन्या विद्यालय, सेक्टर–5, डा॰ अम्बेडकर नगर; आदर्श मान्यता प्राप्त स्कूल, विकासपुरी; विक्टोरिया कन्या विद्यालय, राजपुर रोड़; सालवान कन्या विद्यालय, राजेन्द्र नगर; गरीब राम मेमोरियल स्कूल, निलोटी मोड़ और केन्द्रीय विद्यालय संख्या 4, दिल्ली कैंट के बच्चे भाग ले रहे हैं।

ध्वज वाहक–बालक

बालकों के मार्च पास्ट में राजकीय सीनियर सेकेंडरी स्कूल, राजौरी गार्डन (मेन); आदर्श मान्यता प्राप्त स्कूल, विकासपुरी; जैन संस्कृत बाल विद्यालय, कूंचा सेठ; कमर्शियल ब्वॉयज सीनियर सेकेण्डरी स्कूल, दरिया गंज; सलवान बाल विद्यालय, राजेन्द्र नगर; गरीब राम मेमोरियल स्कूल, निलोटी मोड़; न्यू ग्रीन फील्ड स्कूल, साकेत; दशमेश सीनियर सेकेण्डरी स्कूल, विवेक विहार के बच्चे शामिल हैं।

स्कूली बच्चों का बैंड

बैंड बजाते आगे बढ़ रहे ये बालक जैन समनोपासक सीनियर सेकेण्डरी स्कूल, सदर बाजार; एस॰ एम॰ जैन सीनियर सेकेण्डरी स्कूल, कमला नगर; महाराजा अग्रसेन सीनियर सेकेण्डरी स्कूल, अशोक विहार; रयान इण्टरनेशनल पब्लिक स्कूल, रोहिणी; विवेकानन्द सीनियर सेकेण्डरी स्कूल, आनन्द विहार; बाल मन्दिर सीनियर सेकेण्डरी स्कूल, कैलाशनगर से हैं। बैंड बजाते आगे बढ़ रहे ये बालक आकाशवाणी दिल्ली के संगीत निर्देशक पण्डित शिव प्रसाद द्वारा रचित 'ये है नया हिन्दुस्तान' नामक धुन बजा रहे हैं।

Band By School Girls

The cultural pageant of school children is heralded by a band of girls drawn from Government aided Schools: Shri Guru Teg Bahadur School, Sis Ganj; Guru Nanak Senior Secondary School, Subzi Mandi. The band is playing the tune **'Swati'** composed by Shri Chand Kishore (Band Master).

Flag Bearers – Girls

Children participating in the March Past of girls are drawn from Sarvodaya Girls School, Samalakha; Sarvodaya Girls School, Mahipalpur; Government Girls School, Sector-5, Dr. Ambedakar Nagar; Adarsh Manayata Prapt School, Vikaspuri; Victoria Girls School, Rajpur Road; Salvan Girls School, Rajendra Nagar; Garib Ram Memorial School, Niloti Mor; Kendriya Vidyala No. 4, Delhi Cantt.

Flag Bearers – Boys

Children Participating in the March Past of boys are drawn from the Government Senior Secondary School, Rajouri Garden (Main); Adarsh Manayata Prapt School, Vikaspuri; Jain Sanskrit Bal School, Kooncha Seth; Commercial Boys Senior Secondary School, Darya Ganj; Salvan Bal Vidyala, Rajendra Nagar; Garib Ram Memorial School, Nilothi Mor; New Green Field School, Saket; Dashmesh Senior Secondary School, Vivek Vihar.

Band by School Boys

The band of boys is drawn from the Jain Samnopasak Senior Secondary School, Sadar Bazar; S.M. Jain Senior Secondary School, Kamla Nagar; Maharaja Agarsen Senior Secondary School, Ashok Vihar; Ryan International Public School, Rohini; Vivekanand Senior Secondary School, Anand Vihar; Bal Mandir Senior Secondary School, Kailash Nagar. The band is playing the tune **'Yeh Hai Naya Hindustan'** composed by Pt. Shiv Prasad, Music Director, Akashvani, Delhi.

जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान

एस॰एल॰एस॰ डी॰ए॰वी॰ पब्लिक स्कूल, मौसम विहार राष्ट्र को प्रगतिशील तथा महान् बनाने वाले तीन 'मंत्रों' 'जय जवान', 'जय किसान', 'जय विज्ञान' को प्रस्तुत कर रहा है। कोई राष्ट्र तभी उन्नति कर सकता है जब वह खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर हो; इसकी सीमाएं पूर्णतया सुरक्षित तथा संरक्षित हों; तथा जहाँ विज्ञान और प्रौद्योगिकी समय के साथ कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ते रहे हों तथा इनका प्रयोग राष्ट्र को सफलता और संपन्नता के मार्ग पर आगे ले जाने के लिए किया जाता हो।

Jai Jawan, Jai Kisan, Jai Vigyan

S.L.S. DAV Public School, Mousam Vihar presents three 'mantras' 'Jai Jawan', 'Jai Kisan', 'Jai Vigyan' for making a nation progressive and great. A nation can progress only when it is self sufficient in food production; its frontiers are perfectly secured and safeguarded; and the science and technologies are keeping pace with the time and applied for bringing forth the nation on the path of success and prosperity.

सावन आयो रे

भारत एक धर्म निरपेक्ष राष्ट्र है जहाँ विभिन्नता में एकता के दर्शन होते हैं। भौगोलिक दृष्टि से भी भारत चारों ऋतुओं से संपन्न देश है। सावन (वर्षाकाल) का महीना सभी मौसमों में सबसे अधिक सुन्दर है। इस मौसम में चारों तरफ हरियाली ही हरियाली होती है तथा मोर, पपीहा तथा कोयल जैसे सभी तरह के पक्षी गाते और नाचते दिखाई देते हैं। दूर कहीं बिजली की कड़क और चमक के मध्य सारी दुनिया सावन (वर्षाकाल) के आगमन से आनन्दित होती है। सर्वोदय कन्या विद्यालय, महरौली की बालिकाएं इस सुन्दर प्रसंग को प्रस्तुत कर रही हैं।

Sawan Ayo Re

India is a secular country where there is unity in diversity. Geographically, India is also a blessed country having all the four seasons. The month of Sawan (Monsoon) is the most beautiful of all seasons. This season is marked by greenery all around and when all types of birds like, peacock, papiha and koyal sing and dance. Between the interplay of thunder and lightening in the distance, the whole world celebrates the coming Sawan (Monsoon). The Girls of Sarvodaya Kanya Vidayalaya, Mehrauli, present this beautiful theme.

लांगा व मंगनियार गायक

यह सांस्कृतिक नृत्य टोली रेत के टीलों तथा मरुभूमि के प्रदेश पश्चिम जोन सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर से आयी है। यह टोली जैसलमेर और बाड़मेर क्षेत्र के गीत तथा नृत्य प्रस्तुत कर रही है। इस गीत और नृत्य में बलशाली घोड़े पर बैठे सुन्दर दूल्हे तथा सजी–धजी डोली में बैठी खूबसूरत दूल्हन का चित्रण है। यह गीत दूल्हे के शिविर में दुल्हन के प्रथम आगमन की शोभा यात्रा की धुन है। दूसरा गीत 'मेंहदी' से संबंधित लोकप्रिय लोक गीत है। यह गीत इस क्षेत्र में उत्सव के मौकों पर गाया जाता है। जोधपुर की युवतियों के इस नृत्य दल के साथ पेशेवर गायक, लांगा तथा मंगनियार संगीतकार तथा राजस्थान के कलाकार हैं। मधुर गीतों के साथ–साथ कामायचा, सारंगी, रावणहत्था, पुंगी, ढोलक, खड़ताल तथा ढोल जैसे लोक वाद्य यंत्र भी हैं।

Langa & Manganiar Singers

From the land of sand dunes and deserts come the cultural troupe from the West Zone Cultural Centre, Udaipur. The troupe presents the songs and dance from Jaisalmer and Barmer regions. The song and dance describe the handsome bridegroom on the mighty horse and the beautiful bride on the decorated chariot. The song is a tune from the procession when the bride comes to the camp of the bridegroom for the first time. The second song is a popular folk song about 'Mehandi'. It is sung on the festive occasions in this region. The troupe which has young school girls from Jodhpur is accompanied by professional singers by Langa and Manganiar musicians and artists of Rajasthan. The melodious songs are accompanied by folk instrument like – Kamayacha, Sarangi, Rawanhattha, Pungi, Dholak, Khartaal and Dhol.

मतवाले पथिक

मदर डिवाइन पब्लिक स्कूल, रोहिणी आज के उन युवाओं को प्रस्तुत करते हैं जो देश के भावी कर्णधार हैं। वे अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए प्रस्तुत होने वाले सशक्त तथा बहादुर सिपाही हैं। वे भाई–चारे, सांप्रदायिक सद्भावना, मैत्री तथा शांति का संदेश सारे विश्व में फैलाना चाहते हैं। उनके हाथों में मौजूद कमल तथा छड़ियां शांति तथा प्रभुसत्ता का प्रतीक हैं, क्योंकि हमारा अहिंसा में अडिग विश्वास है, परंतु मौका आ पड़ने पर ये कमल तथा छड़ी जीवन के झंझावातों में मातृभूमि की रक्षा के लिए ढाल तथा तलवार बन सकती हैं।

विजय गाथा

श्रेष्ठता की प्रतीक, विजय, भारतीय इतिहास का पर्याय है। रेनबो पब्लिक स्कूल, जनकपुरी के छात्रों द्वारा विजय के इस उत्सव को युद्ध के मैदान से लौटते राजा के नेतृत्व में उसके सैनिकों की शोभायात्रा के माध्यम से प्रस्तुत किया जा रहा है। वे विजय का उत्सव मना रहे हैं। वे चाहते हैं कि हम भी इस विजयोत्सव में शामिल हों।

अंधेरे से उजाले की ओर

रानी दत्ता आर्य स्कूल, दरिया गंज की रचना "असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्माऽमृतं गमय" श्लोक पर आधारित है।

यह श्लोक असत्य अथवा झूठ से भरे जीवन से सत्य पर आधारित जीवन की ओर जाने की इच्छा व्यक्त करता है। अज्ञानता के अंधेरे से ज्ञान के उजाले में जाने की इच्छा। अपयश की मौत से अमरता की ओर जाने की इच्छा। जिस राष्ट्र के लोग अंधेरे से उजाले की ओर जाने में विश्वास करते हों वह राष्ट्र बुरे कार्यों अथवा विचारों के वशीभूत नहीं हो सकता तथा सदैव न्याय के मार्ग पर अग्रसर रहेगा।

Matwale Pathik

Mother Divine Public School, Rohini presents the youths of today who are the helm of affairs of the country in future. They are dynamic and brave soldiers to escorts their motherland. They want to spread the message of brotherhood, communal harmony, friendship and peace in the whole universe. The lotus and sticks in their hands are the symbol of peace and sovereignty, as we have firm faith in non-violence, but should occasion demand, this lotus and sticks could be the shield and the sword to defend the motherland from vagaries of life.

Vijay Gatha

Victory, the symbol of supremacy is synonymous with Indian history. The students of Rainbow Public School, Janakpuri present the celebration of this victory through a procession led by the king and his soldiers on their return from the battlefields. They celebrate the joy of victory. They want us to also to join them in their celebrations.

From Darkness to Light

The composition of the Rani Dutta Arya School, Darya Ganj is based on the sloka :

'असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्माऽमृतं गमय।

The sloka expresses the desire to go from untruth or a life full of lies to life based on truth. A desire to go from darkness of ignorance to the light of knowledge. A desire to go from death of ignominy to the desire of being immortal. A nation whose people believe in the desire to go from darkness to light can never succumb to evil actions or thought and thus will always be on the path of righteousness.

प्यार का जज़्बा

भारतीय सभ्यता और संस्कृति की शक्ति उसके महान मूल्यों से है जिसका भारतीय सभ्यता दम भरती रही है। भारत की विभिन्न जातियां तथा धर्म राष्ट्रीय अखण्डता के सूत्र में बंधे हैं। मानवीय प्रेम–इस चिरंतन सत्य का भारतीय सांस्कृतिक विरासत के साथ सामंजस्य ही एन॰ के॰ बागरोडिया पब्लिक स्कूल, रोहिणी के विद्यार्थियों की इस प्रस्तुति का भाव है।

Pyar Ka Jajba

Indian civilization and culture derive its strength from its great values for which Indian civilization has stood for. India's different casts and religion are tied up in a single chord of National Integration. Human love – the ultimate truth intertwined with the cultural heritage of India is the theme of presentation by the students of N.K. Bagrodia Public School, Rohini.

पावन आंचल

'हिरण कूदना' (मृग–नृत्य) गंगा इंटरनेशनल स्कूल के छात्रों की प्रस्तुति है। इस नृत्य में आकर्षक ढंग से सजाये गए भारत के शानदार तिरंगे का चित्रण है। भारतवासी भारत–माता के आशीर्वाद और शुभकामना के अधीन फलते–फूलते हैं। भारत–माता हम सभी को प्रोत्साहित करती है तथा वैश्विक भाई–चारे, विश्व अमन व चैन को बढ़ावा देने में हमारी मदद करती है। इस नृत्य में ये बच्चे सभी भारतवासियों की तरफ से दिल की गहराइयों से भारत–माता को नमन करते हैं।

Pawan Anchal

The students of Ganga International School present 'Hiran Kudna' (Dance of the Deer). The dance describes the tastefully decorated and magnificent tri-coloured mantle of India. Indians have flourished under the blessed hand of her benedictions. Mother India inspires all of us and helps us in promoting universal brotherhood **(वसुधैव कुटुम्बकम्)**, world peace and harmony. The children on behalf of all Indians salute her from the core of their hearts in this dance.

छाऊ नृत्य

पुरुलिया का 'छाऊ नृत्य' हवाई करतबों तथा सशक्त नाटकीय प्रस्तुतिकरण सहित एक अत्यधिक विविध तथा रंगारंग लोक कला है, जिसका प्रसंग रामायण और महाभारत दो महाकाव्यों से लिया गया है। तालबद्ध ढोलक की थाप, शहनाई तथा बांसुरी वादन इस नृत्य की विशेषता है। चमकदार छाऊ मुखौटे तथा रंग–बिरंगी पोशाकें इस नृत्य को और अधिक विशिष्ट तथा रंगीन बना देती हैं। छाऊ नृत्य पूर्व जोन सांस्कृतिक केंद्र, कलकत्ता द्वारा प्रस्तुत किया जा रहा है।

Chhau Dance

Chhau dance of Purulia is one of the most vibrant and colourful folk art forms with acrobatic movements and vigorous form of dramatic presentation, drawing its theme from the two great epics Ramayana and Mabharat. The dance is characterised with rhythmic drum beatings, shenai and flute playing. The radiant Chhau masks and dazzling costumes make it more distinctive and colourful. Chhau dance is being presented by the East Zone Cultural Centre, Kolkata.

Printed by :
Indu Cards & Graphics
Chawri Bazar, Delhi-6. Telefax : 3278811